कम्प्रोमाइज

कम्प्रोमाइज

जगदीश प्रसाद मण्डल

ISBN : ९७८-९३-८०५३८-४४-०

मूल्य : भा. रू. २००/-

पहिल संस्करण : २०१३

ग्राम, पोस्ट : बेरमा, भाया : तमुरिया

जिला : मधुबनी (बिहार)

श्रुति प्रकाशन :

रजिस्टर्ड ऑफिस : ८/२१, भूतल, न्यू राजेन्द्र नगर, नई दिल्ली- ११०००८.

दूरभाष-(०११) २५८८९६५६-५८ फैक्स- (०११) २५८८९६५७

Website : http://www.shruti-publication.com

e-mail : shruti.publication@shruti-publication.com

मुद्रक: अजय आर्टस्, दरिया गंज, नई दिल्ली-११०००२

अक्षर-संयोजक: उमेश मण्डल

डिस्ट्रिब्यूटर:

पल्लवी डिस्ट्रिब्यूटर, वार्ड न. ६, निर्मली (सुपौल), मो. ९५७२४५०४०५, ९९३१६५४७४२

***COMPROMISE**- Maithili Play by Jagdish Prasad Mandal.*

परिचए-पात : जगदीश प्रसाद मण्डल

जन्म : ५ जुलाइ १९४७ ई.मे

पिताक नाओं : स्व. दल्लू मण्डल।

माताक नाओं : स्व. मकोबती देवी।

पत्नी : श्रीमती रामसखी देवी।

पुत्र : सुरेश मण्डल, उमेश मण्डल, मिथिलेश मण्डल।

मातृक : मनसारा, भाया- घनश्यामपुर, जिला- दरभंगा।

मूलगाम : बेरमा, भाया- तमुरिया, जिला-मधुबनी, (बिहार) पिन- ८४७४१०

मोबाइल : ०९९३१६५४७४२, ०९५७०९३८६११, ०९९३१७०६५३१

ई-पत्र : jpmandal.berma@gmail.com

शिक्षा : एम.ए. (हिन्दी आ राजनीति शास्त्र) मार्क्सवादक गहन अध्ययन। हिनकर साहित्यमे मनुखक जिजीविषाक वर्णन आ नव दृष्टिकोण दृष्टिगोचर होइत अछि।

जीविकोपार्जन : कृषि

सम्मान : गामक जिनगी लघुकथा संग्रह लेल विदेह समानान्तर साहित्य अकादेमी पुरस्कार २०११क मूल पुरस्कार आ टैगोर साहित्य सम्मान २०११; तथा समग्र योगदान लेल वैदेही सम्मान- २०१२; एवं बाल-प्रेरक विहनि कथा संग्रह "तरेगन" लेल "बाल साहित्य विदेह सम्मान" २०१२ (वैकल्पिक साहित्य अकादेमी पुरस्कार रूपेँ प्रसिद्ध) प्राप्त।

साहित्यिक कृति :

उपन्यास : (१) मौलाइल गाछक फूल (२००९), (२) उत्थान-पतन (२००९), (३) जिनगीक जीत (२००९), (४) जीवन-मरण (पहिल संस्करण २०१० आ दोसर २०१३), (५) जीवन संघर्ष (पहिल संस्करण २०१० आ दोसर २०१३), (६) नै धाड़ैए (२०१३) प्रकाशित। (७) सधबा-विधवा, (८) बड़की बहिन तथा (९) भादवक आठ अन्हार शीघ्र प्रकाश्य।

नाटक : (१) मिथिलाक बेटी (२००९), (२) कम्प्रोमाइज (२०१३), (३) झमेलिया बिआह (२०१३), (४) रत्नाकर डकैत (२०१३), (५) स्वयंवर (२०१३) प्रकाशित।

लघु कथा संग्रह : (१) गामक जिनगी (२००९), (२) अर्द्धांगिनी (२०१३), (३) सतभैंया पोखरि (२०१३), (४) उलबा चाउर (२०१३), (५) भकमोड़ (२०१३)

विहनि कथा संग्रह : (१) बजन्ता-बुझन्ता (२०१३), (२) तरेगन (बाल-प्रेरक विहनि कथा संग्रह) (२०१० पहिल संस्करण, २०१३ दोसर संस्करण)

एकांकी संग्रह : (१) पंचवटी (२०१३)

दीर्घ कथा संग्रह : (१) शंभुदास (२०१३)

कविता संग्रह : (१) इंद्रधनुषी अकास (२०१३), (२) राति-दिन (२०१३), (३) सतबेध (२०१३)

गीत संग्रह : (१) गीतांजलि (२०१३), (२) तीन जेठ एगारहम माघ (२०१३), (३) सरिता (२०१३), (४) सुखाएल पोखरिक जाइठ (२०१३)

मिथिलाक वृन्दावनसँ लऽ कऽ बालुक ढेरपर बैसल
फुलवाड़ी लगौनिहारकेँ
समरपित...

पात्र परिचए

पुरुष पात्र-

(१)	नसीवलाल-	किसानक अगुआ, ६५ बर्ख	0
(२)	सुकदेव-	बटाइ किसान (बटेदार) ६४ बर्ख	
(३)	मनचन-	बटेदार, ४० बर्ख	
(४)	सोमन-	बटेदार, ४५ बर्ख	
(५)	रघुवीर-	तीमन-तरकारी उपजौनिहार, ४५ बर्ख	
(६)	रामरुप-	बटेदार, ४४ बर्ख	
(७)	कर्मदेव-	बी.ए. पास युवक	
(८)	प्रो. कृष्णदेव-	५०-५५ बर्ख	
(९)	दिनेश-	मैट्रिकक छात्र	
(१०)	शिवशंकर-	एजेंट (बोरिंग-दमकल)	
(११)	घनश्याम-	बैंक मैनेजर	
(१२)	बहादुर-	नौकर	
(१३)	मनमोहन-	इंजीनियर	
(१४)	संतोष-	एग्रीकल्चर ग्रेजुएट	
(१५)	डा. रघुनाथ-	सेवा निवृत डाक्टर, ६० बर्ख	

नारी पात्र-

(१)	अनुराधा-	डा. रघुनाथक पत्नी, ५८ बर्ख
(२)	सुधा-	कृष्णदेवक बेटी। हाइ स्कूलक छात्रा
(३)	शान्ती-	पंचायत मुखिया, २५ बर्ख
(४)	आभा-	शिक्षिका, २२ बर्ख
(५)	सोनिया-	सुकदेवक पत्नी, ६० बर्ख

पहिल दृश्य

(आसिन मास। रौदियाह समए...)

सोनिया- अपनो नार सधि गेल। काल्हि मनोहर मामागामसँ आनए गेल। दुइओ-चारि बल्हीक ओरियान अपनो नै करब तँ माल-जालकेँ कथी खाइले देबै?

सुकदेव- मनमे तँ अपनो अछि मुदा छुच्छ हाथ थोड़े मुँहमे जाइ छै।

सोनिया- कोनो कि अन्न नै खाइ छी जे नै बूझब। मगर दुआरपर जेकरा गरदनिमे डोरी बन्हने छिऐ तेकर निमरजाना केकरा करए पड़तै।

सुकदेव- (मुड़ी डोलबैत...) जेकरा पाइ छै उ आनो गामसँ कीनि आनत। मुदा...?

सोनिया- मुदा कहने समए मानत। कोनो ओरियान तँ करैये पड़त।

सुकदेव- (तरहथ्थीसँ आँखि मलैत...) ने एक्को मुट्ठी नार अछि, ने बाधमे घास अछि आ ने बाँसक पत्ता एक्कोटा हरिअर अछि। आन साल अधियोपर तोड़ै छेलौं तैयो कहुना कऽ काज चला लइ छेलौं। ऐ बेर सेहो सभटा झड़किए गेल...। देखियौ की होइ छै?

सोनिया- ताबे ओहिना ठाढ़े रहत। दुआरपर लक्ष्मी कलपने परतवए केकर हेतै?

सुकदेव- गाममे केकरो देखबो कहाँ करै छिऐ जे दू मुट्ठी मांगिओ लेब। जिनका सभकेँ बेसी होइतो छन्हि ओ तँ अपने पाछू तबाह छथि। जेकरा छैहे नै ओ अपनो पति नै बँचा सकैए तँ दोसरकेँ की

बँचाओत। तहूमे दुइए-चारि दिनक बात रहैत तखनि ने। ऐ बेर नै भेने अगिलो साल तेहने हएत।

सोनिया- छुच्छे सोग केने चिन्ता मेटाइ छै। जखनि दिने उनटा भऽ गेल तखनि सुनटा सोचने हएत।

सुकदेव- (बेबस...) की उपए करब। जखनि समैये संग छोड़ि देलक तखनि जीबैक केते भरोस करब।

सोनिया- ई अहींटा बुझै छिऐ आकि औरो गोरे।

सुकदेव- की उपए करब?

सोनिया- उपए की करब! जेहेन समए बनल तेहेन बनि जाउ। तखने किछु पारो-घाट लगत। नै तँ...।

(सुकदेव सोनियाक मुँह दिस बघजर लगल जकाँ टकटकी लगा तकैत, सुकदेवक आँखि सोनिया पढ़ि...)

चलू दुनू गोरे। मरहन्नाक जे बुट्टी-बाटी भेटत सेहो काटि लेब आ केतौ-केतौ जे चिचोर सभ छै सेहो काटि कऽ लऽ आनब।

सुकदेव- बेस कहलौं। जाबे बरतन ताबे बरतन। हाँसू नेने आउ। खोलियापर चुनौटी अछि सेहो नेने आएब।

(सोनिया जाइत। मनचनक प्रवेश...)

मनचन- भैया, जान बँचाएब भारी भऽ गेल।

सुकदेव- से की?

मनचन- कलक पानि बन्न भऽ गेल। पानिए ने खसै छै।

सुकदेव- से की भेलह?

मनचन- पान-सात दिनसँ मटियाह पानि अबै छेलै। ओकरा जमा कऽ कहुना काज चलबै छेलौं। काल्हिसँ ओहो बन्न भऽ गेल।

सुकदेव- दोसर कलसँ काज चलाबह?

मनचन- एँह, कोनो कि एक्केटा कल बन्न भेल। टोलक सभ

बन्न भऽ गेल।

सुकदेव- तखनि पीबै की छह?

मनचन- पोखरिक पीबै छी। ओहो लटपटाएले अछि।

सुकदेव- बौआ की करबहक। आखिर ऐ धरतीपर अपना सभ (मनुख) नै किछु करबहक तँ माल-जाल, चिड़ै-चुनमुनी बुते हेतै। देखै नै छहक जे केते रंगक चिड़ै पड़ा गेल।

मनचन- भैया, तोरे सबहक मुँह देखि जीबै छी। सबहक गति एक्के देखै छी। तामसो केकरापर करब। ऐ देहक कोनो ठेकान अछि। ने देहक ठेकान अछि आ ने देखिनिहारक ठेकान। तखनि तँ जाबे हाथ-पएर घिसिआइए घिसिअबै छी।

सुकदेव- अखनि जाह। निचेनमे कखनो गप करब। दू मुट्ठी मालक ओरियान करए जाइ छी। देखहक जे आसिन मास जकाँ एक्कोरत्ती लगै छै। अखुनका ओससँ खढ़-पातक डगडगी रहैत से केहेन उखड़ाह लगै छै।

मनचन- ऐसँ नीक तँ जेठमे छेलै। जेठोसँ खरहर समए लगै छै। एकटा बात मन पड़ल।

सुकदेव- की?

मनचन- ऐसँ पछिला रौदी नम्हर रहै आकि छोट?

सुकदेव- तोरा केहेन बूझि पड़ै छह?

मनचन- नम्हर बूझि पड़ैए।

सुकदेव- ओ चारि सालक भेल रहए। एकरा तँ सालो नै लगलै।

मनचन- हमरा नम्हर बूझि पड़ैए।

सुकदेव- दिन बितने लोक दुखो बिसरि जाइ छै। तोरो सएह भेलह।

मनचन- नै भैया, से नै भेल। विधने मोटका कलमसँ लिख देने छथि तँए ने मन रहैए।
(मुस्की दैत...)
मुदा एकटा बात कहै छिअह।

सुकदेव- की?

मनचन- हम सभ तँ जानिए कऽ गरीब छी तँए बुड़िबक छी। मुदा जेकरो मेहिक्का कलमसँ लिखलखिन ओहो तँ कोंकियाइते अछि।

सुकदेव- अखनि जाह। काजक बेर उनहि जाएत। एकटा बात मन रखिहऽ। पछुलका शताब्दीमे पच्चीसटा रौदी भेलै। एक सालक रौदी लोककेँ चारि बर्ख पाछू ठेलै छै।
(दूटा हाँसू नेने सोनियाक प्रवेश...)

सुकदेव- (स्वयं...) केतए गेल पचास बर्खक जिनगी। पानिक दुआरे कोसी नहरि आ शक्तिक दुआरे पनिबिजली। जँ बनल रहैत तँ की अझुके जकाँ मिथिलांचलवासीकेँ पड़ाइन लगितै? चिड़ै जकाँ उड़ैत-उड़ैत लोक चिड़ै बनि गेल। चिड़ै बनने मनुख-मनुख कहबैक जोग रहत। जेकरा अपन बाप-दादाक बनौल सुन्दर गाम-घर छै ओ घर छोड़ि घुरमुरिया खेलाइए। खाइर...।
(सोनियाकेँ देखि...)
तमाकुल अनलौं कि ओहो सठि गेल?

सोनिया- (मुँह चमका...) सुआइत लोक कहै छै जुन्ना जरि गेल ऐंठन नै गेल। पेटक ओरियान रहै आकि नै रहै मुदा मुँहमे सुपारी चाहबे करी।

सुकदेव- सुपारीक मर्यादा की छै से अहीं बुझबै। सुपारी खेनाइक अंग छी जे खेलोपरान्त अतिथि-अभ्यागतकेँ

विदाइ स्वरूप देल जाइ छै। सुपारीओ जोकर मान-मर्यादा जइ पुरुखमे नै रहल ओहो पुरुखे भेल। हिजरोसँ बत्तर अछि।

सोनिया- बुझलौं, बुझलौं साँप फूसलबैक मनतर। (विचार बदलैत) एकटा बात पुछौं?

सुकदेव- एकटा किए। एक हजार पूछू।

सोनिया- पेटक आशामे पेट काटि भरै छी आ घर अनैकाल टुटरूम-टुम भऽ जाइए। छोड़ि दियौ बटाइ खेती? (सोनियाक विचार सुनि सुकदेव ऊपर-सँ-निच्चाँ धरि सोनियाकेँ निहारि नजरि चेहरापर अँटका, अपन पछिला जिनगीपर दौगबैत, ऐना जकाँ देखए लगल। तड़पति मने...)

सुकदेव- जखनि अपना धन-वित्त नै अछि तखनि...?

सोनिया- तखनि की?

सुकदेव- बटाइओ खेती केने अपन जिनगी तँ ठाढ़ केने छी। मारि-धूसि खटै छी, भरि पेट आकि अदहा पेट खाइ तँ छी। जँ ईहो छोड़ि देब तँ की गोबर-गोइठा जकाँ केतौ पड़ल रहब।

सोनिया- बड़ीटा दुनियाँ छै। जेतए पेट भरत तेतए देह धुनि जिनगी बिताएब।

सुकदेव- ई तँ बुझै छी जे हाथ-पएर लाड़ने केतौ पेट भरत। मुदा जे फुलवाड़ी (गाम) बाप-दादाक लगौल अछि, मनुख जकाँ मनुख बनि जीबैत एलौं, तेकरा छोड़ि...?

सोनिया- की आनठाम मनुख नै रहै छै?

सुकदेव- हँ रहै छै। मुदा मनुख-मनुखक आ समाज-समाजक बीच भुताहि गाछी, मरुभूमि, पहाड़, समुद्र सदृश भाषा, काज बेवहारसँ जिनगी बदलि-बदलि गेल

अछि। जइसँ एते खाधि मनुख-मनुखक बीच बनि गेल अछि। जइसँ कियो केकरो देखौ ने चाहैए। एहेन स्थितिमे...।

सोनिया- कोनो कि खुट्टा गाड़ि सभदिन रहब जे अनेरे एते माथा धूनि देहक हड्डी झकझकबै छी। बुझिते तँ छिऐ जे घरवाली घर लेती दाइ जेती छुच्छे।

सुकदेव- बाप-दादाक फुलवाड़ी ओ नै छियनि जे सिरिफ समैया फूलक होइ। बाप-दादाक फुलवाड़ी ओ छियनि जइमे फूलक गाछक जड़िमे कुण्डली रखल अछि।

पटाक्षेप।

दोसर दृश्य

(सुकदेव सोमन ऐठाम जाइत बाटमे...)

सुकदेव- (उत्तेजित...) पचास बर्खसँ किसान-बोनिहारक संग मिलि कोसी नहरिक पानिसँ खेतीओ आ बिजलीओक सपना पूरा हएत तइ आशामे रहलौं। मुदा आइ की देखै छी? घरमे अन्न नै खेतमे पानि नै मशीनक नामो-निशान नै। यएह सोराज (स्वराज) साठि बर्खक छी। की हमसभ टकटकी लगौने मरि जाय। मुदा ऐ उमेरमे कएले की हएत? भगवान बुढ़ाड़ी दैते किए छथिन। जँ दइ छथिन तँ जीबैक जोगार किए ने कए दइ छथिन। की टकटकी लगा आँखि पथरा परान तियागि दी। उसरि रहल अछि गामक चास-बास, उसरि रहल अछि पशुधन, उसरि रहल अछि गामक खेत-खड़िहाँन, उसरि रहल अछि गामक कला-संस्कृति।

(सोमनक घर। आँगनसँ निकलि सोमन देह खोलने कन्हापर धोती नेने नहाइले विदा भेल...)

सोमन- सबेरे-सबेरे केम्हर-केम्हर भैया?

सुकदेव- एलौं तँ तोरेसँ किछु विचार करए मुदा तोरा देखै छिअह जे केतौ जाइक सुर-सार करै छह।

सोमन- हँ भैया, कनी हाटपर जाएब। तँए औगताइ करै छी। मुदा जखनि आबि गेलह तँ किछु इशारोमे कहि दाए। जखनि भेँट भऽ गेलिअ तखनि चुपे-चाप चलिओ केना जेबह?

सुकदेव- गप तँ गप छी, दोसरो घड़ी हएत। मुदा काजमे बाधा भेने तँ काज मारल जाएत। काज मरने जिनगी मरै छै। एक तँ समैये तेहेन दुरकाल भऽ

गेल जे ओहिना सभ पटपटाइए। तहूपर जँ जोगारो बाधित हएत तखनि तँ आरो तबाही बढ़त।

सोमन- गप जे कहि देने रहबह तँ रस्तो-पेरा सोचैत-विचारैत रहब। ओम्हरसँ (हाट) घुमब तँ भेँट केने एबह।

सुकदेव- गप तँ नम्हर अछि। मुदा तोरो बेर परहक भदबा बनब नीक नै। अच्छा साँझमे भेँट हेबह किने?

सोमन- हाट जाएब अनठाइओ दैतिऐ। मुदा आइ सोमक हाट छी। कहैले तँ दूटा हाट लगै छै मुदा सोमक हाटक मोकाबला बसस्पतिक हाट करतै?

सुकदेव- से की?

सोमन- सोमक हाटमे सीतामढ़ीक वेपारीसँ लऽ कऽ सुपौल फारविसगंज धरिक वेपारी अबै छै। छह दिन ओकरा सभकेँ अबै-जाइमे लगै छै। तहूमे गाए-बड़दक पएरे एनाइ-गेनाइ सेहो रहै छै।

सुकदेव- हँ, से तँ लगिते हेतै। तैओ ओही वेपारी सभकेँ धैनवाद दिऐ जे एते मेहनति करैए।

सोमन- अनठौने नै बनत भैया। बहरबैया वेपारी सभ मुइल-टुटल सभ उठा लइए।

सुकदेव- केहेन कारोबार ओकरा सबहक छै जे मुइल-टुटल सभ कीनि लइए?

सोमन- छीहे औगताएल भाय साहैब, नै तँ सभ बात बुझा देतौं। एको मुट्ठी नार-पात नै रहने देहमे कछमछी लगल अछि। खढ़-पानिले जे हुकड़ैत देखै छिऐ तँ मन घोर-मट्ठा भऽ जाइए। ओना...?

सुकदेव- की ओना?

सोमन- बेर परहक बात बजने बेसी नीक होइ छै। खाइर, कनी देरीए ने हएत। ओते लफरि कऽ चलि पुरा

लेब। अपना गाममे हाटे ने होइए, नै तँ जीबैक एकटा बाट लोककेँ खुजि जइतै।

सुकदेव- हँ, से तँ होइतै। तोरो देरी हेतह।

सोमन- की करब भैया, चारू दिससँ घेरा गेल छी। तेहेन समए भऽ गेल अछि जे अपनो सबहक जान बँचब कठिन भऽ गेल हेन।

(दू डेग आगू बढ़ैत सुकदेव...)

सुकदेव- कनी-मनी पूजीओ तोड़ि कऽ पहिने मनुखक जान बँचाबह। बादमे बूझल जेतै।

सोमन- जाबे साँस अछि ताबे तँ आशामे हाथ-पएर लाड़बे-चाड़बे करब। अजगरो तँ अपन जिनगीक ओरियान करिते अछि।

पटाक्षेप।

तेसर दृश्य

(मवेशी हाट। माल-जालक संग अन्नो-पानि आ तीमनो-तरकारी...)

(सोमन आ रामरुप...)

रामरुप- गोधियाँ, मालक मंदी आबि गेल अछि। दोसर कोनो बाटे नै सुझल तँए कनी घटो लगा कऽ बेच लेलौं। तोहर केहेन रहलह?

सोमन- (मुस्कीआइत...) सुतरल गोधियाँ। सुपौलिया वेपारी पकड़ाएल। अपन मन तँ झुझुआइते छेलए। पौरुके तीन हजारमे बड़द किनने छेलौं। लार-पातक दुआरे अदहो देह नै छेलै। मनमे छेलए जे पाँच बरख मारि-धूसि जोतबो करब आ तेकर बादो बेचब तैयो दाम आबिए जाएत मुदा की करितौं खुट्टा उसरन भऽ गेल।

रामरुप- अही दुआरे हमहूँ बेच लेलौं। तेहेन धन छेलए जे मनसँ नै जाइ छेलए मुदा रखबो करितौं तँ खाइले कथी दैतिऐ? महिना दिनसँ कपैच-कुपैच कऽ खाइले दइ छेलिऐ। मुदा परसू आबि कऽ ओहो सधि गेल। गठुल्ला घर उछेहलौं जे दू दिन चलल।

सोमन- घर उछेह खुआ लेलह तँ फेर घर?

रामरुप- खुट्टापर जेकरा बान्हि कऽ रखने छेलिऐ ओकरा जे अदहो पेट खाइले नै दैतिऐ से केहेन होइत। जखने थैरमे जाइ छेलौं आकि हुकड़ए लगै छेलए। ओकर कलपति मन देखि अपनो मन कलैप जाइ छेलए। तँए सोचलौं जे बरसात तँ अगिला साल औत, बूझल जेतै।

सोमन- (मुड़ी डोलबैत...) हँ से तँ ठीके। जैठीन एक दिन

पार लगनाइ कठिन अछि तैठीन साल भरि आगूक सोचब बुड़िबक्कीए ने हएत।

रामरुप- आब तँ गामे चलबह किने?

सोमन- हँ। चलब तँ गामे मुदा एकटा काज पछुआएल अछि। चलह एक फेरा लगाइओ लेब आ आधमन चाउरो कीनि लेब।

रामरुप- मन तँ हमरो होइए। मुदा मालक पएरे एलौं से थाकि गेलौं। मोटरी उठबैक साहसे नै होइए।

सोमन- एँह हद करै छह तहूँ। चलह ने कोनो दोकानपर बैस जलखैओ-चाह करब आ दस मिनट जिराइओ लेब। बुझै छहक जे कहुना पाँच रूपैआ किलो सस्ता भेटतह।

(चाहक दोकान। ब्रिन्चपर चाउरक मोटरी रखि रघुवीर सेहो बैसल...)

रामरुप- कनी मोटरी घुसका लिअ। की छी मोटरीमे भाय?

रघुवीर- की रहत। चाउर छी। आब कि कोनो भात खाइ छी आकि दिन घीचै छी।

रामरुप- से की?

रघुवीर- अपना सबहक जे अगहनी चाउरक सुआद आ मस्ती छै से थोड़े ऐ चाउरमे छै। तखनि तँ अपन हारल...।

रामरुप- की भा देलक?

रघुवीर- तँए, कनी मन मानलक। अगहनी चाउरसँ पाँच रूपैआ सस्ता अछि।

रामरुप- तब तँ गोधियाँ अपनो सभ अध-अध मन कऽ लऽ लेब, से नीके?

सोमन- हमहूँ तँ यएह सोचि कऽ कहलिअ। अखनि जदी कनी भीरे हएत तँ तीन दिनक सिदहामे चारि दिन कटि जाएत।

रामरुप- हम सभ पछुआएल छी तैबीच सठतै तँ ने भाय?

रघुवीर- से की अद्दी-गुद्दी वेपारी छी। पाँच गो ट्रक भिड़ौने अछि। मुदा खँड़तुआ जकाँ लेबालो ढेरियाएल अछि।

रामरुप- (मोटरी दिस देखि...) तरजू देखै छी। अहूँ कोनो चीज बेचैले आएल छेलौं?

रघुवीर- हँ। तरकारी उपजेबौ करै छी आ हाटमे बेचबो करै छी। भगवान दसे कट्ठा खेत देने छथि। ओकरे बीचमे कल गरा देने छिऐ आ बारहो मास तरकारीए उपजबै छी।

रामरुप- सभ किछु बिक जाइए?

रघुवीर- (कनी ठमकि...) हँ बिक तँ जाइए मुदा...?

रामरुप- मुदा की?

रघुवीर- यएह जे तेहेन चिक्कनिया लेबाल सभ भऽ गेल अछि जे चीज चिन्हबे ने करैए।

रामरुप- से की?

रघुवीर- की कहब। लहटगर देखि चीज कीनैए। किड़ी-फतिंगीक बेसी दबाइ हम नै दइ छिऐ। तइसँ देखैमे समान कनी दब रहैए।

रामरुप- अहाँ किए नै दबाइ दइ छिऐ?

रघुवीर- अपनो खाइ छी किने। देखैमे ने दबाइ देल नीक लगैए मुदा जहरक अंश ओइमे रहिए जाइ छै किने। मुदा भगवान हमरो दिस देखै छथि?

रामरुप- से की?

रघुवीर- अखनो एहेन कीनिनिहार छथि जे हमरे चीजकेँ पसिन्न करै छथि। दू-पाइ महगे बिकाइए। अहाँ सभ केतए आएल छेलौं?

रामरुप- (मिड़मिरा कऽ...) की कहब भाय, रौदीक मारल डिरियाइ छी। बड़द-गाए बेचए आएल छेलौं। खुट्टा उसरन भऽ गेल।

रघुवीर- (मुड़ी डोलबैत...) दोसर उपाऐ कथी अछि। तेहेन दुरकाल समए भऽ गेल अछि जे लोकोक प्राण बँचब कठिन भऽ गेल अछि तैठीम माले-जाल गेल किने। पहिने मनुखक जान बँचाउ। तखनि बूझल जेतै।

रामरुप- अहाँ तँ हाटक तरी-घटी बुझैत हेबै। कहू जे एते-एते दूरसँ जे वेपारी सभ अबैए, से केना पार लगै छै?

रघुवीर- एकरा सबहक भाँज बड़ भारी छै। बड़का-बड़का वेपारी सभ छी। चरि-चरि, पँच-पँच बएच बनौने अछि। गामसँ हाट आ हाटसँ गाम एक बट्ट केने रहए। अड़डा बना-बना कारोबार पसारने अछि।

रामरुप- एकरा सभले रौदी-दाही नहियेँ छै?

रघुवीर- (अचंभित होइत...) रौदी-दाही! हद करै छी अहूँ। सदिखन घैलापर पाइ चढ़ौने रहैए। जेना अपना सभले रौदी-दाही जनमारा छी तेना एकरा सबहक अगहन छी। एक बेर रौदी-दाही पेने सेठ बनि जाइए।

पटाक्षेप

चारिम दृश्य

(नसीवलालक घर। दरबज्जाक ओसारक कुरसीपर बैस नसीवलाल आँखि मूनि किछु सोचैत। सोमनक संग सुकदेव अबैत...)

सुकदेव- नीन छी यौ भाय?

(सुकदेवक बात सुनि आँखि खोलि औगताइत...)

नवीसवलाल- नै! नै! सूतल कहाँ छी। समैक फेरीसँ चिन्तित भऽ गेल छी। खेलहो अन्न देहमे नै लगैए। एक दिस जहिना भूख पियास मेटा गेल तहिना आँखिक नीन्न सेहो। धैनवाद अहीं सभकेँ दी जे एहनो दुरकालमे हँसी-खुशीसँ जीबै छी।

सोमन- हद करै छी भाय! राँड़ कानए अहिवाती कानए तइ लगल बरकुमारि कानए।

नसीवलाल- तोहर बात कटैबला नहियेँ छह सोमन मुदा...?

सोमन- मुदा की?

नसीवलाल- ओना, जे जेते पछुआएल अछि ओ ओते समस्यासँ गरसित अछि। मुदा प्रकृतिक विपति सभपर पड़ै छै। तहूमे जे जेते अगुआएल रहैए ओकरा ओते बेसी पड़ै छै।

सोमन- हँ, से तँ पड़िते छै।

नसीवलाल- बौआ, ओना तोहर उमेरो केते भेलह। एक गाममे रहितो कम सम्पर्कमे रहै छह। सुकदेव भाय बतरिया छथि। तहूमे बच्चेसँ दुनू गोरे गामसँ जहल तक संगे रहलौं। मुदा...?

सोमन- मुदा की?

नसीवलाल- यएह जे आब बूझि पड़ैए जे जिनगीए ठका गेल।

सोमन- से की?

नसीवलाल- की कहबह आ केते कहबह। एकटा कोसीए नहरिक बात सुनह। जहिया जुआने रही तहिएसँ कहै छिअह। बड़ लिलसा रहए जे कोसी नहरि बनत। डैम बनतै। नहरिक पानिसँ खेत पटत आ डैममे पनिबिजलीक यंत्र बैसतै। जइसँ तेते बिजली हएत जे घर-दुआरक इजोतक संग करखन्नो चलत। मुदा सभ आशापर पानि हरा गेल। आइ जौं बिजली रहैत तँ गामो बजारे जकाँ भऽ गेल रहैत। मुदा...?

सोमन- मुदा की?

नसीवलाल- यएह जे ई बात मनसँ मेटा गेल छेलए जे एहेन रौदीसँ भेँट हएत। मुदा...!

सोमन- मुदा की?

नसीवलाल- अपन संग-संग गामोक कल्याण भऽ जाइत। खेती-पथारीक संग एते छोट-पैघ करखन्ना बनि गेल रहैत जे बेरोजगार केकरा कहै छै से तकनौसँ नै भेटैत। मुदा आइ देखै छी जे गाम-गामक लोक उजहि कऽ दिल्ली, कलकत्ताक संग जहाँ-तहाँ पड़ा रहल अछि।

सोमन- हँ। से तँ भऽ रहल अछि। मुदा माटिओ फाँकि कऽ तँ मनुख नहियेँ रहि सकैए। जेतए पेट भरतै तेतए ने जाएत।

नसीवलाल- कहलह तँ बेस बात। मुदा गाम ताबे नै हरियाएत जाबे गामक बच्चा-बच्चा ठाढ़ भऽ अपन भविस दिस नै ताकत।

सोमन- एहेन समए भेने लोक केना ठाढ़ हएत?

नसीवलाल- सएह ने मनकेँ नचा रहल अछि। सभ माए-बाप बेटा-बेटीपर आशा लगौने रहैए जे हमरासँ नीक बनि

धिया-पुता गुजरो करत आ नीक जकाँ आगूओ बढ़त। मुदा आँखि उठा दुनियाँ दिस तकै छी तँ चौन्ह आबि जाइए। बाल-बच्चाक कोन गप जे अपने बुढ़ाड़ी भरिसक कनिते कटत।

सुकदेव- वएह बात मनमे औँढ़ मारलक भाय, तँए एलौं हेन।

नसीवलाल- भाय, कथी विचार करब। छुच्छ हाथ मुँहमे दइए कऽ की हएत। ने कियो गाम-घरक महौत बुझैए आ ने अपन शक्तिक उपयोग करए चाहैए। सभ अपन अमूल्य श्रम-मेहनत- दोसराक हाथे बेच बजारक चकचकीमे बौआइ-ए।

सुकदेव- यएह सभ देखि ने मन उच्छटि गेल हेन। मुदा केकरा कहबै, के सुनत। अहाँ तँ गुल्ली-डंटासँ अखनि धरिक संगी छी। जे तित-मीठ भेल तइमे तँ दुनू गोरे संगे छी।

नसीवलाल- (चानि परहक पसेना पोछैत...) जहिना माटिक ईंटाकेँ वएह माटि पानिक संग मिलि जोड़ि-साटि-दैत अछि तहिना ने मनुक्खोकेँ सिनेह साटि दैत अछि। मुदा सिनेह औत केना? एक दिस धनक भरमार दोसर दिस भूखल पेट। तैबीच चोर-उचक्काक सघन बोन। केना लोकक परान बँचतै?

सुकदेव- सोझहे चिन्ते केनौं तँ नहियेँ हएत आ ने भागलासँ हएत। सोचि-विचारि रस्ता धड़ए पड़त। जँ से नै करब तँ एक लोटा पानि आ एकटा काठीओ मुइलापर के देत?

नसीवलाल- भाय, जहिया घोड़दौड़ करैबला छेलौं तहिया तँ करबे ने केलौं, आब ऐ बुढ़ाड़ीमे की हएत? किछु करए लगै छी तँ हाथ-पएर थरथराए लगैए। जइसँ बुझलो काजमे धकचुका जाइ छी।

सुकदेव- भाय, असे तँ जिनगीक संगी छी। जइ संग लोक जिनगीक रस चुसैत अछि। तेकरो छोड़ि देब...?

नसीवलाल- (सुकदेवपर आँखि गरा मुड़ी डोलबैत...) भाय कहै तँ छी लाख टकाक गप। अपनो जोकर नै सोच-विचार करब तँ अकाल मरबो तँ नीक नहियेँ छी।

सुकदेव- नीक अधला केतए छै भाय! भलहिं लोक अपना जिनगीकेँ स्वार्थी बुझे मुदा जाबे धरि अपने निरोग नै रहब ताबे धरि दोसराक विषयमे की सोचि आ की कऽ सकै छी।

नसीवलाल- हँ, से तँ ठीके। विचारोकेँ प्रभावित तँ जिनगीए करैत अछि। नीक-नीक भाषणे करब आ अपन चालि छुतहरक अछि तँ ओइ भाषणक महौते की? जहिना विज्ञान सिद्धान्त-थियोरीक- संग बेवहारो-प्रेक्टिकलो- कऽ कऽ देखबैत अछि तहिना ने नीतिशास्त्र सेहो अछि।

सुकदेव- अखनि धरि यएह बूझि ने जीबैत एलौं, मुदा...?

नसीवलाल- हँ, समैक चक्र तँ प्रवल अछिए मुदा एहेन प्रबल तँ नै अछि जेकरासँ सामना नै कएल जा सकैत अछि। जीता-जिनगी हारिओ मानि लेब, ओहो तँ...?

सुकदेव- हँ, से तँ उचित नहियेँ अछि। मुदा समनो तँ...?

नसीवलाल- हँ, कठिन अछि। मुदा लंका सन राक्षसक बीच हनुमान केना...?

सुकदेव- हँ, तहिना।

नसीवलाल- (अपसोच करैत...) पाछू घूमि तकै छी तँ बूझि पड़ैए जे जरूर चूक भेल। जना कोसी नहरि आ पनिबिजली लेल सामाजिक स्तरपर ठाढ़ भेलौं तेना बेक्तीगत जीवनक बाट छूटि गेल।

सुकदेव- से की?

नसीवलाल- यएह जे जना मध्यम किसान छी। अपना खेत अछि। तेना ने खेतमे पानिक ओरियान केलौं आ ने परिवारो जोकर मशीन। जौं से केने रहितौं तँ भलहिं महग काज होइत मुदा जीबैक बाट जरूर धरौने रहैत।

सुकदेव- जखनि चारि पएरबला हाथी चूकि जाइए तखनि तँ मनुख दुइए पएरबला अछि। जइ समए जे चूक भेल, आइ ने ओ समए बँचल अछि आ ने जिनगीक ओ अंश।

नसीवलाल- अखनि धरि तँ हाले-चालमे समए निकलि गेल। काजक गप तँ छूटिए गेल। किम्हर आएल छेलौं?

सुकदेव- भाय, अहाँसँ नुकाएल नहियेँ छी। अखनि तक जे जीबैक आस बटाइ खेत अछि ओ टूटि गेल। खेतबलाकँ तँ खेत रहबे करै छन्हि मुदा बटेदारकँ घरोक आँटा गील भऽ जाइ छै।

नसीवलाल- दुर्भाग्य अछि भाय।

सुकदेव- जेकरा सोन छै ओकरा पहिरनिहार नै छै आ जे पहिरिनहार अछि ओकरा सोन नै छै।

नसीवलाल- से तँ अछिए। गामक बारह आना खेत नोकरिहाराक अछि। जे खेती नै करैत अछि। जखनि कि बारह आना लोक खेतीपर जीबैत अछि। मुदा कोन दुख एहेन छै जेकर दबाइ नै छै।

सुकदेव- भारी बनरफाँसमे पड़ि गेल छी। अखनि तक खेती छोड़ि दोसर लूरि नै सीखलौं। खांहिसो नै भेल। घरसँ बाहरो जाएब से कोन लूरि लऽ कऽ जाएब। भीख मांगि खाइसँ नीक अन्न-पानि बेतरे घरमे प्राण तियागि देब हएत। अगदिगमे पड़ि गेल छी।

नसीवलाल- अहूँसँ बेसी तँ अपने पड़ि गेल छी। अहाँ तँ नै ऐ गाम ओइ गाम जा कऽ कमाइओ-खा सकै छी मुदा...।

सुकदेव- यएह बात मनमे अहुरिया काटि रहल अछि। जहिना संग-मिलि एते दिन कटलौं तहिना आगूओ केना कटत, तेकर...?

नसीवलाल- कानितो जीब। सेहो नीक नहियेँ।

(कर्मदेव प्रवेश...)

नसीवलाल- भाय, मन तँ अखनो तेहेन हुड़कैए जे शेष जिनगी जहलेमे बिताएब मुदा बुढ़ाड़ी...। नवतुरियामे समाजक प्रति कोनो रूचिए नै अछि। रुचिओ केना रहत। जहिना परचा पोस्टरमे परिवारक परिभाषा दैत अछि तहिना समाजक कोन बात जे माएओ-बापकँ परिवारसँ लोक अलगे बुझैए।

कर्मदेव- काका, हमहूँ सएह पुछए एलौं जे एहेन समैमे घरसँ बिना भगने केना जीब?

नसीवलाल- बौआ, तोरे सभपर समाजक दारो-मदार अछि। मुदा जखनि तोंही सभ चिड़ै जकाँ उड़ि पड़ा रहल छह तखनि तँ समाजक-गामक- भगवाने मालिक।

सोमन- केकरापर करब सिंगार पिया मोरा आन्हर हे।

कर्मदेव- काका, जँ जीबैक बाट भेट जाएत तँ किए भागब?

नसीवलाल- बौआ, तूँ तँ पढ़ल-लिखल नौजवान छह। तोरामे एते शक्ति छह जे किछु कऽ सकै छह। शक्ति जगाबह।

कर्मदेव- अखुनका समैसँ जे अपन तुलना करै छी तँ बूझि पड़ैए जे कारी मेघ लटकल भादोक अमवसिआक बारह बजे रातिक बीच पड़ल छी।

नसीवलाल- पढ़ि-लिख कऽ एते निराश किए छह?

कर्मदेव- बूझि पड़ैए जे एहेन पढ़ाइ पढ़ि लेलौं जे ने घरक रहलौं आ ने घाटक।

नसीवलाल- ओना जीबैक बाट बेकती-विशेष सेहो बनबैए आ बना सकैए। मुदा समाजकेँ बनने बिना जेहेन हेबाक चाही से नै बनि सकैए। तँए बेगरता अछि जे दुनू संग-संग बनए। जइले तोरे सन-सन नवयुवक सँ अपेक्षा अछि। फाँड़ बान्हि मैदानमे कुदए पड़तह।

कर्मदेव- कियो तँ काजे देखि ने फाँड़ बान्हत?

नसीवलाल- (अर्द्ध हँसी हँसि...) ऐले समाजकेँ जगबए पड़तह। जखने समाज नीन तोड़ि सुनत तखने ओछाइन समेटि घरसँ बहरा रस्तापर आबि ठाढ़ भऽ जाएत। जखने ठाढ़ हएत तखने नव सुरूजक रोशनीमे अतीतक गौरव देखत।

कर्मदेव- की गौरव?

नसीवलाल- मिथिला दर्शनक गौरव देखैले ओकर बनैक प्रक्रिया देखए पड़तह। संयुक्त परिवार बजनहि नै, बनैक आ चलैक ढंग घड़ए पड़तह। जहिना कोनो बाट कोनो स्थान धरि पहुँचबैत तहिना मिथिला दर्शन छी।

कर्मदेव- की दर्शन?

नसीवलाल- एते औगताइमे नै बूझि सकबहक। अखनि हमहूँ औगताएल छी। मालो-जालकेँ पानि नै पीएलौं हेन, हुकड़ैए।

कर्मदेव- तखनि?

नसीवलाल- सौंसे समाजक बैसार बरहम स्थानमे करह। सबहक विचारसँ एकटा रस्ता ताकि आगू डेग उठाबह।

कर्मदेव- आइए बैसार करब।

नसीवलाल- एते अगुतेने काज नै चलतह। कौल्हुका समए बना कानै-कान सभकेँ जना दहुन।

कर्मदेव- बेस।

पटाक्षेप।

पाँचम दृश्य

(बेरक समए। परतीपर बैसार...)

सुकदेव- (उठि कऽ...) भाए-बहिन लोकनि, जेते दिन अपना सबहक अजादीक भेल ओतेक उमेर हमरो भेल। किएक तँ कोसी नहरि लेल नसीवलाल भाइक संग सरकारी ऑफिसमे करीब पचास बर्खसँ धरना, प्रदर्शन सभाक संग जहलो जाइत-अबैत रहलौं। जे रौदी बिसरए लगल छेलौं आ आशा एते जगि गेल छल जे रौदीसँ भेँट नै हएत। मुदा ऐ बेरक रौदी सिखा रहल अछि जे सभ केलहा पानिमे चलि गेल। जहिना सबहक जान अवग्रहमे पड़ल अछि तहिना तँ अपनो भऽ गेल अछि।

सोमन- (बैसले-बैसल...) करबो तँ पानिए ले ने केलौं। पानि ले केलहा पानिमे गेल।

नसीवलाल- (ठाढ़ भऽ...) लंगोटिया संगी सुकदेव भाय छथि। बच्चेसँ दुनू गोरे संगे रहलौं। दुनू गोटेक बीच अंतर एतबे अछि जे हमरा अपन खेत अछि आ हुनका अपन नै छन्हि। मुदा करै छी दुनू गोटे खेतीए। अपना खेत रहितौ आशा-आसीमे रहि गेलौं। तैबीच जिनगी ससरि गेल।

सोमन- एक दिस नहरि खुनाइ होइए आ दोसर दिस ढहि-ढहि भरैए। बीचमे सरकार मदारी-नॉच पसारने अछि।

नसीवलाल- खेती लेल पानि ओहने जरूरी अछि जेहने मनुख आ माल-जाल लेल। बिना पानिए खेती भइए नै सकैए। जइ हिसाबसँ नहरि खुनाइ शुरू भेल जौं खुना गेल रहैत तँ अपना सभ बहुत अगुआ गेल

रहितौं। मुदा की देखै छी?

कर्मदेव- कनी फरिछा कऽ कहियौ काका?

नसीवलाल- (हँसैत...) बौआ गामक बात बड़ नम्हर अछि तँए ओते नै कहि अपन बात बजै छी। दस बीघा जोत जमीन आ बाँकी गाछ बेख, खरहोरि इत्यादिमे बरदाएल अछि। बारह मासक सालमे तीनटा मौसम जाड़, गरमी, बरसात होइए। मौनसुनी बरखासँ बरसातमे काज चलैए। बाँकी सालक आठ मास (दू मौसम) ओहिना रहैए।

सोमन- गोटे-गोटे बेर झाँटो आ पथरो खसैए।

नसीवलाल- हँ, हँ, सेहो होइए। अपन देश मूलत: किसानक देश छी। खेती-पथारी मुख्य बेवसाय छी जे अदौ-सँ-अखनि धरि चलि अबैत अछि। समैपर बरखा भेल तँ किसानक मन हरियाएल रहल नै तँ सालो भरि मरचुन्नी रहल। प्रश्न अछि पान खाएल मुँह मुस्कियाइत रहए। जैठीन लोक पानिक जोगार केने अछि ओइठीन हरियरी अछि। उन्नतिक रस्ता पकड़ि आगू मुहेँ ससरि रहल अछि। खेतक बले रंग-बिरंगक करखन्नो ठाढ़ केने अछि। अपना सबहक जड़िए सुखाएल अछि तँ ऊपर केना पोनगत?

कर्मदेव- समस्या तँ भारी अछि?

नसीवलाल- जुगक अनुकूल भारी नै अछि। किएक तँ आइ हम सभ ओइ जुगमे पहुँच गेल छी जइ जुगमे एहेन-एहेन समस्या धिया-पुता खेल सदृश अछि। मुदा...?

कर्मदेव- मुदा की?

नसीवलाल- मुदा यएह जे जेकरा हाथमे काज करैक भार छै ओकर नेते भंगठल छै। कोन काज केना हएत तइ

दिस नजरिए नै छै। नजरि छै जे कोन-काज केना दुइर हएत तइ दिस।

कर्मदेव- तखनि की करब?

नसीवलाल- अखनि बहुत बात बजैक समए नै अछि। जइ काज ले सभ एकठाम बैसलौं तैपर विचार करू। गामक लोक आ गामक सम्पतिमे केना संबन्ध स्थापित हएत तैपर विचार करू।

कर्मदेव- हम सभ तँ नवतुरिया छी नीक-नहाँति नहियेँ बुझै छी तँए कनी अपने रस्ता बता दियौ?

नसीवलाल- अखनि इतिहास-भूगोल देखैक काज नै अछि। अखनि एतबे विचार करैक अछि जे गाममे जेते जमीन अछि आ जेते लोक छी ओकर हिसाब बुझैक। बारह आना जमीन हुनकर छन्हि जे खेती छोड़ि अन्तए जा नौकरी करै छथि। चारि आना गाममे रहनिहारकेँ छन्हि। हुनके सबहक जमीन लोक बटाइ कऽ कऽ कोनो धरानी जीबै छथि। तँए जरूरी अछि ऐ खाधिकेँ भरैक। जाबे से नै हएत ताबे समस्या बनले रहल।

(कहि बैस जाइत...)

कर्मदेव- बेरा-बेरी अपन-अपन विचार रखै जाइ जाउ?

सोमन- कहैले हमहूँ किसाने छी मुदा ने अपना खेत अछि आ ने हर-बड़द। जनेपर हरो कीनै छी आ अनके खेतमे खेतीओ करै छी। जेना-तेना जिनगी घिसियबै छी। आगू-पाछूक बात सेहो नहियेँ बुझै छी। तँए अपने-लोकनिक जे विचार हएत ओइसँ बाहर हमहूँ नै रहब।

(सोमन बैस जाइत। आभा उठि कऽ ठाढ़ होइत...)

आभा- (जोरसँ...) जँ देश अपन छी तँ देशक सम्पतिओ

अपन छी। जरूरति अछि सबहक-सुख-दुखमे सबहक भागीदारीक। जे गाममे रहि खेत जोतै छथि गामक खेत हुनका जिम्मा हेबाक चाही। जँ से नै हएत तँ जहिना मार-काटसँ इतिहास भरल अछि तहिना नव पन्ना आरो जोड़ाएत?

शान्ती- आभा बहिनक बात कटैबला नहियेँ छन्हि किएक तँ साले-साल पनरह अगस्तकेँ हमहूँ सभ स्वराजक झंडा फहराबै छी। मुदा की स्वराज अछि? समाजक सदस्यक संग सरकारक अंग सेहो छी तँए शान्तीसँ सभ काज करैत चलू। नसीवलाल कक्का आ सुकदेव कक्का जहिना उमेरगर छथि तहिना अनुभवी। तँए जेना-जे विचार दथि हम सभ ओ करी।

सुकदेव- जेहने नवकवरिया आभा छथि तेहने शान्ती। मुदा दुनूक विचार सुनि हृदए शान्त भऽ गेल। खुशीसँ मन भरि गेल। सबहक विचारसँ एकटा रस्ता तँइ हुअए। जेकरा मानि सभ आगू बढ़ी।

नसीवलाल- दौग-बड़हा करैबला उमेर तँ नहियेँ अछि मुदा मेहौता बड़द जकाँ संग-संग बहैले तैयारे छी। अखनि गाममे पढ़ल-लिखल नौजवान कर्मदेव अछि। चाहब जे दौग-धूप करैक भार ओकरे देल जाए।

कर्मदेव- जँ समाज भार देता तँ जहाँ धरि सकब इमानदारीसँ सम्हारब।

नसीवलाल- जेते नोकरिया छथि हुनकासँ सम्पर्क कऽ सभ बात कहियनु। समाजक निर्माण सभ मिलि करब, सर्वोत्तम।

पटाक्षेप।

छठम दृश्य

(कृष्णदेवक डेरा। सूर्यास्तक समए। पनरह बर्खक बेटा दिनेश आ तेरह बर्खक बेटी सुधा दरवज्जापर बैस परीक्षाक गप-सप्प करैत...)

सुधा- भायजी, अहाँ सबहक परीक्षा तँ लगिचा गेल?

दिनेश- हँ। अगिला महिना आठ तारीखसँ हएत।

सुधा- सुनै छी, ऐ बेर चोरि-तोरि नै चलत?

दिनेश- चोरि बन्न भेनाइ ओते असान अछि जे नै चलत। भलहिं सेन्टरपर नै होउ मुदा आरो जगह बन्न हएब असान अछि।

सुधा- (जिज्ञासासँ...) औरो ठाम होइ छै?

दिनेश- होइ छै भेला जकाँ खूब होइ छै। जएह भोजैतनी सहए चटैतनी। जेकरे ऊपर चोरि रोकैक भार छै सएह सभ करैए। जेकरे फलाफल छी जे नीक विद्यार्थीक रिजल्ट अधला होइ छै। आ अधला विद्यार्थीक रिजल्ट नीक होइ छै।

सुधा- से एना किए होइ छै?

(कृष्णदेवक प्रवेश...)

दिनेश- हम तँ सभ बात बुझबो ने करै छी पापाकेँ सभ बूझल हेतनि।

सुधा- पापा, परीक्षामे चोरि केतए-केतए होइ छै?

कृष्णदेव- बुच्ची, ओना पुछलह तँ कहबे करबह। मुदा अधला गप सुनैमे समए नहियेँ लगाबी, सएह नीक।

सुधा- जँ अधला गप नै सुनब तँ फेर नीक-अधला बुझबै केना?

कृष्णदेव- (मुस्की दैत...) कहलह तँ ठीके। देखहक ओना लोक परीक्षाकेन्द्रपर जे किताब-चिट-पुरजी लऽ कऽ

लिखैए तेतबे बुझै छै। मुदा ऐ सभसँ नम्हर-नम्हर चोरि दोसर होइए। जखनि कापी एकत्रिक भऽ परीक्षक ओइठाम पठौल जाइ छै तखनि कापी बदलि-बदलि लेल जाइए।

सुधा- नै बुझलिऐ। कनी नीक जकाँ फरिछा कऽ कहियौ?

कृष्णदेव- परीक्षाभवनसँ बाहर काँपी लिखाइत अछि आ जमा करैकाल बदलि लेल जाइत अछि।

सुधा- (आश्चर्यसँ...) तखनि तँ ओकरा बहुत नम्बर अबैत हेतै?

कृष्णदेव- अबिते अछि। कोनो कि एतबे होइए। एकर उपरान्तो जैठीम काँपी जमा होइए आ मार्क-सीट तैयार होइए असली करामात तैठीन होइए। बनियाँक कारोबार जकाँ रूपैआक बरखा होइए।

सुधा- तखनि तँ रूपैएबलाक विद्यार्थीक रिजल्ट नीक होइत हेतै?

कृष्णदवे- होइते अछि।

(कर्मदेवक प्रवेश...)

कर्मदेव- गोड़ लगै छी कक्का।

कृष्णदेव- नीके रहऽ। गाम-घरक की हाल-चाल छह?

(भीतरसँ कृष्णदेवक पत्नीक अबाज- गौआँ-घरूआ दुआरे रहब कठिन भऽ गेल। केकरो असपतालक काज होउ, आकि कोट-कचहरीक दौगल चलि आएत। जना सबहक तोरा एतै गारल होइ।

कान घुमा कर्मदेव सुनि ग्लानिसँ भरि गेल। मुदा समाजक प्रतिनिधि बूझि सभ सहैले तैयार...)

कर्मदेव- काका, आइ धरि एहेन रौदी नै देखने छेलौं। ओना उमेरे केते अछि मुदा जहियासँ गियान-परान भेल तहियासँ एहेन समैसँ भेँट नै भेल छेलए।

कृष्णदेव- (सुधासँ...) बुच्ची कर्मदेव भाय एलखुन। चाह नेने आबह।

(दुनू भाए-बहिन जाइत अछि...)

कर्मदेव- अपना दिसक की हाल-चाल अछि?

कृष्णदेव- नीक नहियेँ कहक चाही। तखनि तँ कौबलाक छागर बनल छी। कखनो काल सोचए लगै छी तँ लाज हुअ लगैए जे एते दरमाहा पाबिओ कऽ पेंइच-उधार करए पड़ैए।

कर्मदेव- किए?

कृष्णदेव- छह-छह मासक दरमाहा पछुआ जाइए। मुदा घरक खरच तँ हेबे करैए। एते दिन मकानक पाछू तबाह छेलौं मुदा पछिला महिना निवृत्ति भेलौं।

कर्मदेव- बड़का चिन्ता पार केलौं।

कृष्णदेव- की पार केलौं। आगू दिस तकै छी तँ ओहूसँ नम्हर-नम्हर चिन्ता घेरने अछि।

कर्मदेव- से की?

कृष्णदेव- दू बर्खक बाद बेटाकेँ मेडीकलमे नाओं लिखाएब तैपरसँ बेटी सेहो बिआहे जोकर भइए जाएत।

कर्मदेव- हँ, से तँ हेबे करत।

कृष्णदेव- पढ़ौनाइ-लिखौनाइ आब हल्लुक रहल। लाखक तँ कोनो मोजरे नै छै। अपन कमाइ हजारमे अछि आ खरच लाखमे अछि तखनि चिन्ता किए ने पछुऔत।

कर्मदेव- अहाँकेँ की कमाइए टा अछि, गामोमे तेते अछि जे...?

कृष्णदेव- सएह कखनोकाल सोचै छी जे गामक खेत बेच बैंकेमे रखि ली। जइसँ मौका-कुमौका काजो करब आ सूदिओ हएत।

कर्मदेव- (आँखि गड़ा कृष्णदेवकेँ देखैत...) कक्का, परिवार माया-जाल छिऐ किने? जे गरीब अछि ओकरा छोटका माया पकड़ै छै आ जे जेते नम्हर हुनका ओते नम्हर पकड़ै छन्हि।

कृष्णदेव- ठीके कहै छह। राजा दुखी परजा दुखी, जोगीकेँ दुख दूना। अपने बात कहै छिअ, गाममे केते खेत अछि से देखते छहक। समए सुभ्यस्त होइए तँ सालो भरिक बुतातो आ किछु बेचिओ-बिकिन लइ छी। ऐ बेर सेहो नै हएत।

कर्मदेव- अहाँ सभ पढ़ल-लिखल छी तखनि...?

कृष्णदेव- (मुस्कीआइत...) ब्रह्मफाँसमे पड़ि गेल छी। जहिना बाबाकेँ तहिना बाबूकेँ चौगामा लोक मालिक कहै छेलनि, मलिकाना निमाहितो छला। हमरो लोक तहिना बुझै छथि। मुदा ब्रह्मफाँस केहेन लगल अछि जे ओ मान-प्रतिष्ठा सम्पतिमे सन्हिया गेल अछि। जँ एको धूर बेचब तँ सोझहे प्रतिष्ठा प्रभावित हएत।

कर्मदेव- खाइर, छोड़ू खिस्सा-पिहानी। अपनेसँ भेँट करैले समाज पठौलनि हेन।

कृष्णदेव- (अकचका कऽ...) समाज पठौलखुन हेन? की बात, की बात, बाजह।

कर्मदेव- ऐ दुआरे पठौलनि हेन जे गाममे खेत-पथारबला तँ अहीं सभ छिऐ तँए सभ कियो एकठाम बैस गामक कल्याणक विचार करी। बेर-बेर रौदी-दाही भऽ जाइए तेकर कोनो स्थायी समाधानक विचार करी।

कृष्णदेव- बहरबैया सभ रहता?

कर्मदेव- ओहीक जानकारी देबाले पठौलनि हेन। अहीं लगसँ काज शुरू केलौं हेन। ऐठामसँ घनश्यामकाका ऐठाम

होइत रघुनाथकाका ऐठाम जाएब। हुनका ऐठामसँ मनमोहनकाकाकेँ भेँट करैत गाम जाएब।

कृष्णदेव- अखनि घनश्यामक दिन-दुनियाँ दोसर भऽ गेल अछि। एक तँ जमीन-जत्थाबला लोक पहिनेसँ रहला तैपरसँ बैंकक नोकरी।

कर्मदेव- हुनकर सोभावो किछु आने ढंगक छन्हि।

कृष्णदेव- सोलहन्नी बनियाँक चालि पकड़ने अछि। खाइर, जुगो-जमाना तँ ओकरे सबहक छिऐ।

कर्मदेव- आठम दिन रविकेँ बैसार छी। से अपने समैपर पहुँच जाइऐ।

कृष्णदेव- बड़बढ़ियाँ। परसू तक तँ तोहूँ घूमि जेबह?

कर्मदेव- हँ, हँ। जेते जल्दी भऽ सकत ओते जल्दी घुमैक कोशिक करब।

कृष्णदेव- चारिम दिन हमहूँ फोनपर सभसँ सम्पर्क करब। एहेन नै जे एक गोटे जाइ आ दोसर पहुँचबे ने करी।

कर्मदेव- हँ, हँ, सभ कियो विचारि लेब। आखिर समाजक तँ अहींसभ बुझनुक भेलिऐ किने?

पटाक्षेप।

सातम दृश्य

(घनश्यामक घर। एजेंट शिवशंकरक संग...)

शिवशंकर- मैनेजर साहैब, हमर कम्पनीक इतिहास सए बर्खक अछि। वस्तुक गुणवत्ता आ वेपारिक साख एहेन अछि जेकर बाँहि पकड़ैबला दुनियाँमे एकोटा कम्पनी नै अछि। जे पाइप (बोरिंगक) आ इंजन (दमकल) हम देब ओ दोसर कियो नै दऽ सकैए।

घनश्याम- बैंक की कोनो अप्पन छी। सिरिफ एक ब्रान्चक मनेजर छी। जाबे काज करै छी तेतबे धरि। सरकारक नजरि कनी गामक खेत दिस उठल तँए ई अवसर आएल। तइ अवसरसँ...?

शिवशंकर- हँ, हँ। हमहूँ कहाँ चाहै छी जे अवसरक लाभ नै हुअए।

घनश्याम- परसूए एक गोटे (दोसर कम्पनीक एजेंट) आएल रहथि ओ पाँच प्रतिशत कमीशनक बात केने छला। ओना अखनि धरि हमरो स्पष्ट आदेश ऊपरसँ नहियेँ आएल अछि। मुदा पछिला मिटिंगमे बाजाप्ता चर्चा भेल रहए। यएह बात हुनको कहि पनरह दिनक बाद भेँट करैले कहलियनि।

शिवशंकर- अहाँ, भलहिं ओइ कम्पनीक बात नीक जकाँ नै बुझैत होइऐ मुदा हम तँ रत्ती-बत्तीक बात बुझै छी। केहेन घटिया माल बना-बना सप्लाइ करैए। ओ दोसर-दोसर बैंकसँ पता लगा लेब। हमर पाइप जँ ओकरापर पटैक देतै तँ थौआ-थाकर कऽ देतै। अहूँ तँ जनिते छी जे नीक वस्तुक उत्पादनमे नीक खरचो बैइसै छै।

घनश्याम- खरचा बेसी बैइसै छै तँ दामो बेसी होइ छै किने?

शिवशंकर- हँ, से तँ होइ छै। मुदा घटिया माल केते दिन चलत सेहो ने देखबै?

घनश्याम- से तँ बेस कहलौं मुदा जे आदेश हएत सएह ने करब।

शिवशंकर- ऐठामक सक्षम किसानक रिपोट देबै तँ किए घटिया मालक आदेश हएत। जैठीम पछुआएल किसान अछि, पहिले-पहिल बोरिंग देखत ओ किआँने गेल नीक-अधला।

घनश्याम- हँ, से तँ मानलौं। मुदा सोलहो आना नेत बिगाड़िओ लेब सेहो तँ नै।

शिवशंकर- (बात लपकि...) हँ, यएह विचार हमरो कम्पनीक अछि। जे औनर छथि हुनकामे ई भावना कूट-कूट भरल छन्हि। मुदा बीचमे जे घटिया कारोबारी सभ अछि वएह सभ ने नीको मालक बजारकेँ घेर घटिया बजार बना दइए। दू-पाइ बेसीओ लगने जँ उपभोक्ताकेँ नीक वस्तु भेटै छै तँ ओकर उपयोगो बेसी दिन करैए।

घनश्याम- मानलौं, जे अहाँक समान तेज अछि मुदा सभकेँ ने अपन-अपन कारोबार अछि। पद आ प्रतिष्ठाक लोभ केकरा नै छै। जे ब्रान्च जेते लाभ बैंककेँ देखाओत ओते ने ओइ स्टापकेँ आगू बढ़ैक अवसर भेटतै।

शिवशंकर- हँ, से तँ मानै छी। मुदा हमर ओहन कम्पनी अछि जे देशे नै विदेशोमे सप्लाइ दैत अछि। दू-साल बीतैत-बीतैत घटिया कम्पनी सभकेँ बजारसँ भगा दैत अछि। भलहिं नव बजार ठाढ़ भेने शुरूमे किछु कमाए लिअए मुदा केते दिन।

घनश्याम- खाइर, छोड़ू ओइ सभकेँ। मोट गाछक मोट मुसरो होइ छै। मुदा जहिना अहाँ तहिना हम। अपना दुनू

गोटेक बीच संबन्ध केना बनत, तैपर विचार करू।

शिवशंकर- (ठहाका मारि...) आब रस्ताक बात भेल ने। अखनि ने अहाँ सोचै छी जे एक्के भागक आमदनी अछि मुदा से नै। दुनू भाग अछि।

घनश्याम- से केना?

शिवशंकर- हमहूँ गामेसँ आएल छी। पिताजी कर्मचारी छला। जखनि लगमे बैसै छेलियनि तखनि जमीन-जत्थाक खेरहा कहै छला।

घनश्याम- (मुस्की दैत...) की कहै छला?

शिवशंकर- (हँसैत...) कहै छला जे जखनि जमीन्दारी चार्ज सरकार लेलक तखनि हमरा सभकेँ अगहन आबि गेल। खेत-खड़िहाँनसँ लऽ कऽ आँगन-कोठी धरि धाने-धान।

घनश्याम- नै बुझलौं?

शिवशंकर- गाममे केते किसान छथि जिनका जमीनक सही-सलामत सबूत छन्हि। एक तँ पहिनहिसँ जाल-फरेबी, तैपर बाढ़ि घर-दुआरक संग कागजो पत्तर ने लऽ जाइ छेलै।

घनश्याम- (मुस्कीआइत...) हँ, से तँ अछि।

शिवशंकर- सरकारक सुविधा तँ बैंके माध्यमसँ ने हएत। असल कार्यालय तँ बैंक हएत। जे किछु किसानकेँ भेटत ओइले तँ बैंकेमे ने बौण्ड बनबए पड़त। बौण्ड लेल तँ ताजा सबूत (करेंट कागजात...) चाही। ई तँ अहीं हाथक भेल।

घनश्याम- (हँसैत...) एक प्रतिशत कम कऽ देब।

शिवशंकर- बड़बढ़ियाँ। कारोबारक गप भइए गेल। चलै छी।

घनश्याम- ओहिना जेनाइ उचित हएत। हम सभ मिथिलांचलक ने छी। अतिथिकेँ देवता बुझै छी। किछु रस-पानी

केने बिना...?

शिवशंकर- आब की ओ जुग रहल जे सुरा-सुन्दरीसँ अतिथिक सेवा होइ छल। हम सभ तँ तेहेन जुगमे आबि गेलौं जे ने खाइक ठेकान आ ने आराम करैक।

घनश्याम- (नोकरकेँ सोर पाड़ि...) बहादुर, बहादुर?
(पहाड़ी नौकरक प्रवेश...)
आँखिक इशारा घनश्याम देलनि। भीतर जा दूटा गिलास आ सनतोला रंगक शीशी नेने आबि टेबुलपर रखि चलि जाइत। शीशी खोलि दुनू गिलासमे लऽ दुनू गोटे पीलनि...)

शिवशंकर- आब आदेश होइ। (कहि उठि कऽ ठाढ़ होइत। घनश्यामो ठाढ़ होइत तखने कर्मदेवक प्रवेश। अबिते कर्मदेव पएर छुबैत...)

घनश्याम- बौआ, हिनका विदा कऽ दइ छियनि। निचेनसँ गप-सप्प करब।

कर्मदेव- हँ, हँ, कक्का। हमहूँ किछु विचारे करए एलौं हेन।
(हाथमे हाथ मिला घनश्याम सड़क तक अबै छथि। घूमि कऽ आबि...)

घनश्याम- आब कहऽ बौआ, गाम घरक हाल-चाल। मुदा पहिने कपड़ा खोलि फ्रेश भऽ चाह पीब लए। तखनि निचेनसँ गप-सप्प हेतै।
(चाह अबैत। कर्मदेवक हाथमे कप धड़बैत घनश्याम अपन चाह आपस करैत...)

कर्मदेव- अहाँ किए चाह घुमा देलिऐ?

घनश्याम- देखबे केलहक। चाह पीऐत-पीऐत पेट भरिया गेल अछि।
(खाली शीशी आ गिलास देखि...)

कर्मदेव- (मुस्की दैत...) कक्का, की कुशल गामक रहत।

एक तँ ओहिना सभतरहें खाधिमे खसल छी तैपरसँ तेहेन रौदी भऽ गेल जे परान बँचब लोकक कठिन भऽ गेल अछि।

घनश्याम- जे बात कहलह ओ नान्हिटा नै अछि। मुदा बिना केनौं तँ नहियेँ कल्याण हएत। भने छुट्टीक दिन रहने मनो हल्लुक अछि। मुदा तैयो एक दिनमे सभ बात कहलो नै जा सकैए। ओना तू पढ़ल-लिखल नवयुवक छह तँए कम्मो कहने बेसी बुझबहक।

कर्मदेव- अहाँ सभकेँ बेवहारिक ज्ञान अछि काका। हम तँ हालेमे कौलेज छोड़लौं हेन। गाम लेल तँ सोलहो आना अनाड़ीए छी।

घनश्याम- गाम तँ तेहेन भऽ गेल अछि जे दू-चारि गोटे, एकठाम बैस अपन सुख-दुख निवारणक गप करब, सेहो ने अछि। सभ अपने ताले बेताल। कियो अपनाकेँ कम बुझैले तैयारे नै होइत अछि। सबहक मन घेराएल अछि जे हमरासँ बुधियार दोसर के अछि?

कर्मदेव- एना किए अछि?

घनश्याम- अखनि धरिक जे बेवस्था रहल ओ संस्कारे बिगाड़ि देने अछि। मुदा अखनि ऐ बातकेँ छोड़ह। अखनि जे दुरकाल उपस्थित भऽ गेल अछि ओइपर गप करह।

कर्मदेव- हँ, सएह बढ़ियाँ।

घनश्याम- अखनि दुइए गोटे छी। तहूमे भने डेरेमे छी। तँए अखनि दुइए परिवारक गप करह। देखते छह जे गाममे सभसँ बेसी खेत अछि। बाबाक अमलदारीमे एकटा मुनहर आ तीनटा बखारीक संग हाथीओ छेलनि। तखनि नोकरी करैक जरूरति हमरा किए

भेल?

कर्मदेव- (किछु सोचैत...) किए भेल?

घनश्याम- यएह सोचै आ बुझैक बात छी। हमरा सम्पति छेलए, घरसँ बाहर जा पढ़लौं। मुदा जेकरा खाइओक उपए नै छै ओकर बाल-बच्चा स्कूल आँखि देखत? खिस्सा तँ सभ कहतह जे बहिन रहितो लक्ष्मी-सरस्वतीक बास एकठाम नै होइ छन्हि।

कर्मदेव- (जिज्ञासा करैत...) छातीपर हाथ रखि कहै छी जे ने अपने मनमे अखनि धरि ई बात उठल आ ने कियो कहलनि।

घनश्याम- ई तँ सिरिफ पढ़ै-लिखैक बात कहलिअ। पढ़नाइ-लिखनाइसँ जरूरी अछि खेनाइ, रहनाइ आ बर-बिमारीसँ बँचैक उपए। आँखि उठा अपने देखह जे की अछि?

कर्मदेव- (आँखि उठा ऊपर-निच्चाँ देखि...) ठीके कहै छी काका। मुदा हएत केना? अहाँ सभ सन बुझिनिहार गामे छोड़ि देने छी तखनि अबूझ केना सबूझ बनत। जाधरि बुझबे ने करत ताधरि आगू डेग केना उठौत?

घनश्याम- यएह बात बुझैक जरूरति अछि।

कर्मदेव- जाधरि बूझत नै ताधरि ओहिना पाछू मुहेँ गुड़कैत जाएत।

घनश्याम- (दुनू हाथसँ दुनू आँखि मलैत...) बौआ, सच पुछह तँ अपना सभ स्वतंत्र देशक गुलाम छी। किसानक देश पूजीपतिसँ हारि गेल छी। भलहिं एकरा पछुआएब कहि अपन प्रतिष्ठा बँचा ली मुदा शासनसँ बाहर छी।

कर्मदेव- सरिया कऽ कहियौ कक्का। नीक नहाँति नै बुझलौं।

घनश्याम- सत बात बजैमे कनीओं धड़ी-धोखा नै होइए। जइ परिवारक सम्पतिसँ चालिस-पचास परिवार चलै छल तइ परिवारकेँ नोकरी करए पड़ै, केते लाजिमी छी। मुदा...?

कर्मदेव- काका, अहाँ लगसँ जाइक मन नै होइए। मुदा काजक भार बैइसै ने दिअए चाहैए। किएक तँ एक निश्चित सीमामे काजक सम्पादन नै भेने, गड़बड़ाइये जाएत। अखनि समाजक काजमे बन्हाएल छी। निचेनमे दोसर दिन औरो बूझब।

घनश्याम- हँ, हँ। से तँ ठीके कहै छह। मुदा आइ बूझि पड़ि रहल अछि जे एकटा संगी भेटल, जे पेटक बात पेटमे लिअए चाहैए। कोन चीजक कमी अछि।

कर्मदेव- से तँ नहियेँ अछि।

घनश्याम- ओना लोकक बुधि विपतिक मारिसँ घटैत-घटैत एते घटि गेल अछि जे समैक संग पकड़ि नै पबैत अछि। खाइर छोड़ह। काजक बात कहऽ?

कर्मदेव- गामक दशा बद-सँ-बदतर भऽ गेल अछि। माल-जाल उपैट रहल अछि। लोक भागि रहल अछि। चलन्त सम्पति (खेत) पाछू मुहेँ ससरि रहल अछि। यएह सभ देखि समाज विचार केलनि जे अगिला रविकेँ सभ मिलि बैसार करी जइमे गामक कल्याणक बाट ताकी।

घनश्याम- (अध हँसी हँसि...) हृदए गामक संग अछि। तँए जेते संभव हएत ओते समाजक सहयोग करब।

कर्मदेव- जखने अहाँ सभ तैयार हेबै तखने समाजक कल्याण निश्चित हएत। आब जाइ छी।

घनश्याम- तोरा जइ चीजक जरूरति हुअह, आन नै बुझिहऽ।

बड़बढ़ियाँ जाह।

पटाक्षेप।

आठम दृश्य

(इंजीनियर मनमोहनक डेरा। दोसरि साँझ। मनमोहन आ संतोष गप-सप्प करैत...)

मनमोहन- बाउ, पहिल ज्वार्निंग छिअह, तँए पहिने घोंसिआ जाह। पछाति बदलीक जोगार लगा देबह।

संतोष- बाबू, भलहिं अहाँ सभ दिन शहरमे रहलौं मुदा गाम गाम छी।

मनमोहन- से की?

संतोष- डेरासँ ऑफिस आ ऑफिससँ डेरा करैत रहलौं, ऑफिसमे बैस घरसँ सड़क धरिक नक्शा कागतपर बनबैत रहलौं जइसँ काजक दायरा सिकुड़ गेल। मुदा हम तँ चारि बर्खमे माटिए-पानिक गुण-अवगुन बुझलौं। अपार धन माटि-पानिमे छिपल अछि।

मनमोहन- से केना?

संतोष- अपना ऐठामक जे माटि-पानि आ मौसम अछि, ओ दुनियाँमे केतौ ने अछि। नान्हिटा देश जापान, जे एशिए महादेशमे अछि, देखियौ ओकरा।

मनमोहन- की अछि, केहेन अछि।

संतोष- ओना ओकर आन बात तँ नै पढ़लौं हेन। मुदा ओकर भौगौलिक बनाबटि आ उन्नति जरूर पढ़लौं हेन। अपना देशक (पहिलुका एक राज्य) दूटा राज्यक बरबरि ओकर लम्बाइओ-चौड़ाइ छै आ जनसंख्यो छै। मुदा दुनियाँक अगुआएल देश अछि।

मनमोहन- एतबे टा अछि?

संतोष- एतबेटा किए कहै छिऐ। ओहूमे दुनियाँक सभ देशसँ बेसी भुमकमो होइ छै।

मनमोहन- भुमकम किए होइ छै?

संतोष- ओइठाम ज्वालामुखी बेसी अछि। खाइर, ऐ बातकेँ छोड़ू। छोट देश आ कम आबादी रहितो ओ ओते अगुआ किए गेल अछि।

मनमोहन- किए अगुआएल अछि?

संतोष- जहिना ओकर खेती अगुआएल अछि तहिना कल-कारखाना। दुनियाँक बाजारमे ओकर माल पटने अछि। तहिना खेतीओक छै। जेते उपज (रकबा हिसाबे) ओकरा होइ छै ओते केकरा होइ छै।

मनमोहन- केना एते उन्नति खेती केलक?

संतोष- ओइसँ बेसी अपनो सभ कऽ सकै छी। मुदा ऐठाम सभसँ पैघ कारण अछि जे साठि बर्ख आजादीक उपरान्तो ऐठामक लोक गुलामीक जिनगी जीब रहल अछि। स्वतंत्र नागरिकक संस्कार आ गुलामीक संस्कारमे अकास-पतालक अन्तर होइ छै। ओना अपनो देश उद्योग-धंधामे जेते अगुआएल अछि ओते खेती-पथारीमे नै अछि। जे भारी खाधि दुनूक बीच बनल अछि।

मनमोहन- एहेन बात अछि?

संतोष- अपने बात लिअ। अखनो गाममे खेतबला परिवार अपन अछि। मुदा खेती करै छी? सभटा बटाइ लगौने छी। बटेदारो सभ तेहेन अछि जे ने ओकरा खेत जोतैक उचित साधन छै आ ने खेती करैक आन साधन। सोलहो आना मौनसूनपर निर्भर रहैत अछि। एक तँ साधन नै दोसर करैक ऊहिओ ओहन नै जइसँ दुनियाँक खेतीक बरबैरेमे औत।

मनमोहन- ओते मत्था-पच्ची करैक कोन जरूरी छह। खाइत-पीऐत रामलला। जहुना जिनगी चलै छह तहुना जे

निमाहि लेबह, ओहो कम भेल।

संतोष- नै बाबू, जिनगीक सार्थकता होइत अपनासँ आगू बढ़ि करैक। सरकारोक आँखि गाम दिस उठल हेन तँए ओकर उपयोग हेबाक चाही। जहिना बाबा अमलदारीमे बखारीक शोभा छल तहिना फेर हएत?

मनमोहन- अखनि जेते असानीसँ शहरक लोक जीबैत अछि ओते गाममे थोड़े हएत?

संतोष- ओइसँ बेसी हएत। हँ अखनि नै अछि। मुदा केना हएत ई तँ गामेक लोककेँ सोचए पड़तै। अपने बात लिअ, हजार-बजारक नोकरी खुसीसँ करै छी मुदा ई बुझै छिऐ जे जँ अपन खेतकेँ समुचित सुविधा बना कएल जाएत तँ करोड़ोक आमदनी हएत?

मनमोहन- हमरो नोकरी लगिचाएले अछि, संगे शरीरो एते भरिआ गेल अछि जे किछु करै जोकर नहियेँ रहलौं। एहेन स्थितिमे केना जीब?

संतोष- केना की जीब? जहिना गाम छोड़ि नोकरी करए शहर एलौं तहिना शहर छोड़ि गाम चलब। हमहूँ ओतबे दिन नोकरी करब जाबे तक अपन समुचित खेतीक रूप नै पकड़ि लेत। अहाँ नै देखै छिऐ जे पँच-पँच-सत-सत सए रूपैए किलो अन्नक बीआ, आन-आन देशबला बेचैए। कनी गौर कऽ कऽ देखियौ जे किलो भरि अन्नक दाम केते अछि।

मनमोहन- हँ, से तँ सुनै छी।

संतोष- की हम अपने ओहन बीआ तैयार नै कऽ सकै छी। जरूर कऽ सकै छी। तहिना नीक बना पशुपालन, नीक किस्म बना माँछ आ औरो केते कहब। हाथसँ करैक हिम्मत आ माथसँ सोचैक शक्तिक

जरूरति अछि।

(कर्मदेवक प्रवेश...)

मनमोहन- आ-हा-हा, बाउ कर्मदेव?

कर्मदेव- (दुनू हाथ जोड़ि...) प्रणाम, चाचाजी।

मनमोहन- बाउ (संतोष) लोटामे पानि नेने आबह। बाटक झमाड़ल छथि। तेकरा बाद चाह-पान चलतै।

(संतोष भीतर जाइत अछि आ लोटामे पानि आनि, कर्मदेवक आगूमे ठाढ़ भऽ...)

संतोष- होउ, पहिने पएर धोउ?

कर्मदेव- अच्छा पछाति धो लेब। कोनो कि पएरे चललौं हेन। सड़कपर सवारीसँ उतरलौं हेन।

मनमोहन- चाह नेने आबह। (संतोष भीतर जाइत अछि...) आकि पहिने किछु खेबह?

कर्मदेव- नै, अखनि किछु ने खाएब। मन गदगड़ल अछि। चाह पीब लेब।

(दू कप चाह नेने संतोष अबैत अछि...)

मनमोहन- (चाहक चुस्की लैत...) अब कहऽ गामक हाल-चाल?

कर्मदेव- गामक हाल-चाल की कहब चच्चाजी। नरकंकाल जकाँ गामक हाड़ झक-झक करैए।

(कर्मदेवक बात सुनि मनमोहन बेउत्तर होइत मुँहपर हाथ लऽ मुड़ी झुका कऽ सोचए लगै छथि। बीचमे ठाढ़ संतोष कखनो पिता दिस देखैत तँ कखनो कर्मदेव दिस। मुदा किछु बजैत नै। दुनू गोटेकेँ चुप देखि...)

संतोष- हम जेठ छी की कर्मदेव, बाबूजी?

मनमोहन- कर्मदेवक तँ नै बूझल अछि मुदा तोहर एक्कैसम लगिचाएल छह।

कर्मदेव- हमरो एक्कैसम चलि रहल अछि।

मनमोहन- तखनि तँ किछुए मासक कम-बेसी हेतह। एक बतरीए भेलह।

कर्मदेव- चाचाजी, जौआँ बच्चाक अंतर पाँचे-दस मिनट होइ छै मुदा ओहूमे जेठाइ-छोटाइ होइ छै?

मनमोहन- हँ, से तँ होइ छै। मुदा ई तँ सर्टिफिकेटसँ फरीएतह।

कर्मदेव- ओहूसँ नीक जकाँ (इमानदारीसँ) नहियेँ फड़ियाएत? किएक तँ अहाँ घरमे भलहिं जनम टिप्पणि हुअए मुदा हमरा घरमे नहियेँ अछि। टिप्पणि देखि स्कूलमे नाओं लिखौने होइ, मुदा हमर तँ अनठेकानी लिखाएल अछि।

मनमोहन- भैयारी बनब पेंचगर छह। दुनू गोरे दोस्ती कऽ लए। संतोषोक विचार गामेमे रहैक छै आ तहूँ गामेमे रहै छह।

कर्मदेव- (मुस्की दैत...) चाचाजी, अहाँ तँ अमृत फल खुआ देलौं। मित्र तँ नरकोसँ उद्धार करैत अछि।
(तीनू गोटेक ठहाका...)
हम केम्हर एलौं से तँ पुछबे ने केलौं?

मनमोहन- गामसँ हटि भलहिं रहै छी, तँए कि समाजक सभ किछु छोड़ि देलौं। दुआरपर आएल अतिथिकेँ पुछल जाइ छै जे केम्हर एलौं? अतिथियेक सेवा तँ धर्मखातामे लिखाइत अछि।

कर्मदेव- (मुस्की दैत...) अपने कहै छी। अखनि औगताइमे छी तँए बेसी गप-सप्पमे समए नै दऽ सकब। जेते समए गमाएब तेते काज पछुआएत।
(मनमोहन आ संतोषो सुनैक इच्छासँ कर्मदेव दिस

तकए लगैत...)

रवि दिन समाजक बैसार छी, सएह कहए एलौं।

मनमोहन- कनी फरिछा कऽ बाजह?

कर्मदेव- गामक मूलपूजी (उत्पादित) खेत छी। खेतेक उपजापर गामक लोक ठाढ़ भऽ जिनगी चलबैत अछि। समाज तँ बनि गेल मुदा सामाजिक पूजी नै बनि सकल। जइसँ एते भारी खाधि (दूरी) दुनूक बीच बनि गेल जे अछैते पूजीए लोक पूजी विहिन भऽ गेल अछि। अही सबहक विचार लेल बैसार भऽ रहल अछि।

मनमोहन- (मुड़ी डोलबैत...) उदेस तँ जबरदस अछि, मुदा...?

कर्मदेव- मुदा की। ऐ धरतीपर सभसँ अगुआएल मनुख अछि, तखनि?

संतोष- कर्मदेव भाय, अहूँ हालेमे कौलेज छोड़लौं हेन आ हमहूँ हालेमे। बेवहारिक दौरमे दुनू गोरे अनाड़ीए छी। किएक तँ जइ गाममे रहै छी ओ जमीनक एक निश्चित सीमाक अन्तर्गत निर्धारित अछि। जहिना जमीन तहिना बसल लोक। मुदा...।

कर्मदेव- मुदा की?

संतोष- जमीनकेँ जाल कहल जाइ छै। जाल फँसबैक वस्तु छी। जहिना मछबार जाल फेकि माँछ फँसबैत, शिकारी शिकार फँसबैत, तहिना शिकारी सभ जमीनक जाल फेकि जमीनकेँ फँसा नेने अछि, तँ...?

(आँखि बिथाड़ि मनमोहन संतोषपर देने। तहिना कर्मदेव सेहो संतोषक आँखि-पर-आँखि अँटकौने...)

कर्मदेव- तँए की?

संतोष- छोटका जालमे छोट माँछ आ छोट शिकार फँसैत

मुदा जेना-जेना जाल नम्हर होइत तेना-तेना नम्हर माछो आ शिकारो फँसैए। जखनि कि महजालमे छोट-पैघ सभ फँसैए। तहिना अखनि सम्पतिक दौड़मे विश्व-जाल पसरल अछि। नीक जकाँ हमरो नै बूझल अछि। मुदा इशारा रूपमे ओइ दिन सुनलौं जइ दिन कौलेजक दीक्षांत समारोहमे सर्टिफिकेट दऽ शिक्षक लोकनि विदा केलनि।

कर्मदेव- दीक्षाक अर्थ?

संतोष- सेहो ओही दिन बुझलौं। कान फूकि दीक्षा मंत्र देनिहार जेरक-जेर घुमैत अछि। मुदा दीक्षाक अर्थ होइत प्राप्ति। अहाँ कौलेजसँ निकलैक सर्टिफिकेट नै लेलौं हेन?

कर्मदेव- हँ, ऑफिससँ तँ जरूर भेटल मुदा दीक्षान्त समारोह कऽ कऽ नै।

संतोष- किए?

कर्मदेव- नीक जकाँ तँ नै बूझल अछि मुदा दस-पनरह बर्खसँ कहाँ दीक्षान्त समारोह भेल हेन।

संतोष- साले-साल हेबाक चाहीए।

कर्मदेव- भने भाय अहूँ गामेमे रहि मोटर साइकिलसँ ऑफिसो करब आ गामोक काज देखब।

संतोष- बेसी समए गामेक काजमे लगत।

कर्मदेव- बहुत बढ़ियाँ, बहुत बढ़ियाँ।

पटाक्षेप

नवम दृश्य

(डा. रघुनाथक घर। ओसारक कुरसीपर बैसल, माथपर हाथ दऽ आँखि मूनि सोचैत। चाह नेने पत्नी अनुराधा अबैत...)

अनुराधा- आँखि लगल अछि। चाह पीबू।

रघुनाथ- आँखि कथी लगत कपार। अनेरे आँखि बन्न भऽ रहल अछि।

अनुराधा- अपने डाक्टर छी तखनि...?

रघुनाथ- अपने डाक्टर छी तेकर माने...?

अनुराधा- तखनि किए रोग...?

रघुनाथ- रोगक सीमा-नाङरि अछि। मनुक्खे जकाँ बिना सींघ-नाङरिक जानवर जकाँ अछि। देहक रोगक डाक्टर ने छी, मनक रोगक थोड़े छी।

अनुराधा- से की?

रघुनाथ- कोनो कि देहेटा मे रोग होइए। मुदा मनोक तँ देहे जकाँ ने सभ किछु छै।

अनुराधा- तखनि तँ औरो नीके किने। जहिना थर्मामीटरसँ बोखार परखल जाइ छै, तहिना ने मनोक बोखार परखैक यंत्र हेतै। तइसँ नापि दबाइ खा लिअ।

रघुनाथ- विधाता ऐठाम जखनि बुधिक बँटबारा हुअ लगल तखनि सभकेँ चम्मछ लऽ लऽ देलखिन आ अहाँ बेरमे बरतने उझलि देलनि।

अनुराधा- एना बताह जकाँ किए बजै छी? जखनि मन गड़बर भऽ गेल तखनि ओकर प्रतिकार करब। हमहूँ सहयोगी छी, सहयोग करब आकि सभकेँ भगा अपने पगलखन्नाक हरीमे ठोकाएब। मन थीर करू। चाह पीबू सिगरेट नेने अबै छी।

(अनुराधा भीतर जाइत। रघुनाथ एक-एक चुस्की चाह पीऐत आ कखनो अकास दिस तँ कखनो निच्चाँ दिस तकैत...)

रघुनाथ- (बड़बड़ाइत...) भुमकम भेलापर उनटनो होइत। जहिना अकासक गाछ-जमीनपर खसैत तहिना ने जमीनो अकास दिस चढ़ैत। मुदा पाबस तँ अकासकेँ अमृतसँ सीचैत।

(रघुनाथकेँ बड़बड़ाइत देखि अनुराधा मुहथरिपर ठाढ़ भऽ सुनए लगली...)

आ-हा-हा की सुन्दरता पाबसोक होइत। करोड़ो-अरबो जीब जन्तुकेँ सृजनो करैत, अमृतेसँ स्नानो करबैत, पीबोले दैत आ दुनूक (अकास-जमीन) बीच अमृतेक बाटो बनबैत।

अनुराधा- (मने-मन उदास भऽ...) भरिसक बुधिक बिमारी पकड़ि लेलकनि। (आगू बढ़ैत) लिअ सिगरेट-सलाइ नेने एलौं। चाहो तँ नहियेँ पीलौं हेन?

रघुनाथ- हमरे नै सुझैए आकि...। मन भरि गेल अहाँ कहै छी चाहो ने पीलौं।

(रघुनाथक मुँहक सुरखी उदास होइत जाइत...)

अनुराघा- मुँहक सुरखी बदलि रहल अछि?

रघुनाथ- लाउ, सिगरेट पीब तखनि चुहचुही औत। की भकुआएल जकाँ बूझि पड़ै छी? (सलाइ खरड़ि सिगरेट धड़ा कस खींच ऊपर मुहेँ धुआँ फेकैत...) देखिऔ धुँआ केना ऊपर मुहेँ जाइए।

अनुराधा- ओछाइन ओछा दइ छी। आराम करू।

रघुनाथ- कहलौं तँ विधाता बुधिक बरतने अहाँ आगूमे उझलि देलनि। जागलमे जइ रोगकेँ भगौल (इलाज) नै हएत सूतलमे केना हएत?

अनुराधा- की सभ होइए?

रघुनाथ- बैसू, कहै छी। ब्रज कन्या तँ अहींटा छी तँए अपन दिलक-दुख अहाँकेँ नै कहब तँ दोसराकेँ कहने की हएत?

अनुराधा- (मुस्की दैत...) से की, से की?

रघुनाथ- अहाँ जे भकुआएल बुझै छी से ठीके बुझै छी। मुदा नीनक भक्क नै जिनगीक रस्ताक भक्क लगल अछि! किम्हर जाएब से चौराहापर बुझिए ने पबै छी।

अनुराधा- बीचमे ठाढ़ भऽ कऽ देखियौ जे कोन बाटक दुभि (खढ़-पात) पएरक रगड़सँ उड़ि गेल छै आ कोन दुभियाह अछि।

रघुनाथ- कहलौं तँ बेस बात, मुदा भकुआएल मने देखबो करिऐ तखनि ने। आन्हरे जकाँ सभ अन्हार बूझि पड़ैए। (दुनू आँखि दुनू हाथसँ मलैत...)
की सपना छल आ की देखि रहल छी।

अनुराधा- से की? से की?

रघुनाथ- सभ किछु समाप्त भऽ रहल अछि। आकि जिनगीए समाप्त भऽ रहल अछि से बुझिए ने पाबि रहल छी।

अनुराधा- से की?

रघुनाथ- परसू रिटायर करब।

अनुराधा- सभ रिटायर करैत अछि आकि अहींटा करब?

रघुनाथ- खाली नोकरीएटा सँ नै ने रिटायर करब। देहोक रोग (ब्लड प्रेशरो) किछु बढ़ि गेल अछि जइसँ रोगी सबहक शिकाइत आबि रहल अछि।

अनुराधा- से तँ आब उमेरो भेल किने?

रघुनाथ- उमेरक असर शरीरपर पड़ै छै आकि ब्रेनपर।

आमक आठी जकाँ कोइलीसँ पकुआ बनत आकि पकुआसँ कोइली।

अनुराधा- तखनि किए एना भेल?

रघुनाथ- ब्रेने छिड़िया गेल। एकरा केना समटब।

अनुराधा- आबो समटू।

रघुनाथ- छिड़िआएल बौस बीछ-बीछि समटल जा सकैए। छिड़िआएल मन केना समटल जाएत? पाछू उनटि तकै छी तँ केतौ गड़बड़ नै देखै छी। मुदा आगू तकै छी तँ नोकरीक संग प्राइवेट कमाइओकेँ जाइत देखै छी।

अनुराधा- से केना?

रघुनाथ- चढ़ंत छल तखनि मकान बनेलौं, क्लीनिक बनेलौं। रेस्ट-हाउसक संग जाँच-पड़ताल करैक यंत्र किनलौं। मुदा आइ की देखै छी?

अनुराधा- की नै देखै छी, कोन चीजक कमी अछि?

रघुनाथ- अपने मुइने जग मुअए। जैठीन रोगीक भीड़ लगल रहै छेलए तैठीन गोटि-पङरा आबि रहल अछि। तहिना रेस्ट-हाउस ढन-ढन करैए। सप्ताहक-सप्ताह जाँच मशीन बैसले रहैए। अपनो दरमाहा अधियाइए जाएत। मुदा खरच...?

अनुराधा- एना किए भेल?

रघुनाथ- समए केते आगू बढ़ि गेल, से नै देखै छी। सभ चीज पुरान पड़ि गेल।

अनुराधा- ऐ सभ दिस नजरि नै गेल छल?

रघुनाथ- नजरि केना जाएत। नजरि तँ शान्तचित्तमे टहलैत अछि। से कहियो कहाँ भेल। दिन-राति एकबट्ट कऽ काजमे लगल रहलौं। जिनगीक विषयमे सोचैक पलखतिए कहिया भेल।

अनुराधा- चिन्तो केने तँ नहियेँ हएत।

रघुनाथ- से तँ नहियेँ हएत। मुदा अनहरिया राति जकाँ अन्हार तँ बढ़ले जाइए।

(कर्मदेवक प्रवेश...)

कर्मदेव- (दुनू हाथ जोड़ि) गोड़ लगै छी चच्चाजी। (अनुराधाक पएर छूबि) गोड़ लगै छी चाचीजी।

रघुनाथ- गाम-घरक हाल-चाल कहऽ?

कर्मदेव- गाम-घरक कथी हाल-चाल रहत। रद्दी कागत जकाँ गामोक दशा भऽ गेल अछि। पछिला साल तँ कनी-मनी नीको छल जे ऐ बेरक रौदी तँ उजाड़ि लगा देलक।

रघुनाथ- बौआ, अपनो दशा ओहने भऽ गेल। मुदा कहबो केकरा करबै। अपन हारल बजितो लाज होइए। मुदा...?

कर्मदेव- मुदा की?

रघुनाथ- यएह जे गामक समाजमे अखनो बेर-विपति पड़लापर एक-दोसरकेँ सहारा दैत। मुदा बजारक समाज तँ ठीक उल्टा अछि। सभ अपने ताले-बेताल अछि। केकरा एते छुट्टी छै जे अनको हाल-चाल पूछत।

कर्मदेव- चाचाजी, अखनि हमहूँ औगताइले छी। कहियो निचेनसँ गप-सप्प करब। अखनि जइ काजे एलौं से गप करू।

रघुनाथ- केहेन काजे औगताएल छह?

कर्मदेव- गामक दशा देखि समाजक (गौआँक) विचार भेलनि हेन जे जेहो सभ बाहर नोकरी-चाकरी करै छथि हुनको सभकेँ बजा समाजक कल्याण केना हएत? तइले एकठाम बैस रस्ता निकाली। सएह कहए एलौं हेन।

रघुनाथ- छाँहो-छुहो तँ किछु कहऽ?

कर्मदेव- चाचाजी, गाममे जे छथि हुनका दूधक डाढ़ी जकाँ अपन खेत छन्हि। जखनि कि जे बाहर रहै छथि, बेसी जमीन हुनके सबहक छन्हि। तइले बैसार भऽ रहल अछि।

रघुनाथ- विचार तँ बड़ दिव्य अछि, मुदा...?

कर्मदेव- मुदा की?

रघुनाथ- थाके पाँव पलंग भेल भारी, आब की लादब हौ वेपारी।' सोझहे आगूमे देखै छह। धानक खखड़ीओसँ बत्तर हालत भऽ गेल अछि। जेहो जिनगी बाकी (बँचल) अछि ओहो पहाड़ जकाँ बूझि पड़ैए।

कर्मदेव- से किए, चाचाजी?

रघुनाथ- बौआ, डाक्टरी छोड़ि आन चीज तँ पढ़लौं नै जइसँ दुनियोँ-दारीक बात बूझितौं। ऐ अवस्थामे आब बूझि पड़ैए जे जिनगीए ओझरा गेल।

कर्मदेव- जखने सभ मिलि एकठाम विचार करब तखने ने अहूँक ओझरी छूटि जाएत।

रघुनाथ- (कनी गुम रहि, किछु सोचि...) बहरबैया सभ रहता?

कर्मदेव- आश्वासन तँ सभ देलनि। तखनि तँ...?

रघुनाथ- कहियाक समए बनौलनि?

कर्मदेव- समए तँ समाजे बनौने छथि। अहाँकेँ जानकारी दिअए एलौं। रवि दिन दू बजेसँ बैसार छी।

रघुनाथ- बड़ बढ़ियाँ। जरूर भाग लेब। परसूए सेवा-निवृत्ति सेहो भऽ रहल छी।

कर्मदेव- परसूए सेवा-निवृत्त भऽ रहल छी?

रघुनाथ- (मिड़मिड़ा कऽ...) हँ, बौआ।

कर्मदेव- (मुस्की दैत...) चाचाजी, अहीं सन-सन लोकक जरूरति समाजकेँ छै।

रघुनाथ- से की?

कर्मनाथ- ऐठामक काज ने हरा गेल। मुदा गाममे अहाँ सभले ओते काज अछि जे कएले ने पार लगत।

रघुनाथ- (किछु सोचि, मुस्कीयाइत...) बेस कहै छह बौआ।

पटाक्षेप

दसम दृश्य

(कृष्णदेव, घनश्याम, मनमोहन आ रघुनाथ। घनश्याम घर। चाह-पान, सिगरेट चलैत...)

घनश्याम- कर्मदेव जे किछु कहलनि, तैपर तँ अपनो सभ विचारि लेब।

कृष्णदेव- अबस-अबस।

घनश्याम- एक तँ बैंकक नोकरी, तहूमे ब्रान्चक जबावदेही। भरि दिन लोकक चरबाहि करैत-करैत परेशान रहै छी। जइसँ गाम-समाजक कुशलो-क्षेम नै बूझि पबै छी। तँए अपने दिशा-निर्देश दियौ।

मनमोहन- बहुत बढ़ियाँ, बहुत बढ़ियाँ घनश्याम भाय बजला।

कृष्णदेव- कहलौं तँ बड़ बढ़ियाँ, मुदा जे चकचकी अहाँ सबहक अछि ओ थोड़े अछि।

रघुनाथ- मनक बात अहाँ बूझि गेलौं।

कृष्णदेव- अहाँ सभ कागत-पत्रक बीच रहै छी। हम कितावक बीच, अन्तर एतबे अछि। मुदा रहै छी तँ सभ कागजेक बीच।

रघुनाथ- कहलिऐ तँ बड़ बढ़ियाँ, मुदा हम सभ सादा कागतक बीच रहै छी अहाँ सजौल कागतक बीच।

कृष्णदेव- सभकेँ अपन-अपन बुझैक दायरा होइ छै, तँए अहूँ सबहक विचारकेँ नकारि नहियेँ सकब। मुदा किछु छिपा कऽ बाजब उचित नै, तँए...?

रघुनाथ- तँए की? जखने अपन-अपन विचार सभ व्यक्त करब तखने ने चारि परिवारक तित-मीठ सोझामे औत। जखने तित-मीठ सोझामे औत तखने ने किछु...?

कृष्णदेव- ई बात तँ सभ बुझै छिऐ जे गामक-समाजक- पढ़ल

लिखल अपने सभ छिऐ। मुदा अपनो सबहक बीच तँ चारि रंगक जिनगीओ अछि। जैठीम अहाँ सभकेँ दरमाहाक संग आनो आमदनी अछि तैठीम हमरा तँ सिरिफ दरमेहेटा अछि।

मनमोहन- (मुड़ी डोलबैत...) हँ, ई तँ अछि।

कृष्णदेव- मुदा परिवार तँ जहिना अहाँ सबहक अछि तहिना अछि। खेनाइ-पीनाइ, कपड़ा-लत्ता, पढ़ाइ-लिखाइ तँ सभकेँ अछि। कनी सोचि कऽ देखियौ जे हम अहाँ सभसँ पछुआएल छी किने।

रघुनाथ- मानै छी। मुदा गामक बैसारमे गामक चर्च हएत किने। तइ हिसाबसँ तँ सभ जमीनदारे (अधिक जमीनबला, नै कि मालगुजारीबला) छी। गामक बारह आना जमीनक मालिक तँ अपने सभ छिऐ किने।

कृष्णदेव- हँ, से तँ छीऐहे। मुदा ओझरीओ तँ असान नै अछि। जइ तरहक जिनगी बनि गेल अछि ओते कमाइ-दरमाहा-सँ पूरा नै पबै छी। अपने गाममे नै रहै छी जे खेतीओ करब। तैपर सँ जँ एको धूर बेचब तँ प्रतिष्ठा माटिमे मिलत।

मनमोहन- तखनि?

कृष्णदेव- जँ सबुर कऽ छोड़िओ देब सेहो नै हएत।

मनमोहन- ई तँ विचित्र ओझरीमे फँसि गेल छी?

कृष्णदेव- बाल-बच्चाकेँ नीक स्कूल-कौलेजमे नै पढ़ाएब सेहो नै हएत। किछुए दिनक उपरान्त रिटायर करब तखनि औझुका जकाँ दरमहो नै रहत। तीन-तीनटा कन्यादान अछि।

रघुनाथ- अच्छा, गामक बैसार संबन्धमे विचार रखियौ।

कृष्णदेव- की विचार राखब, किछु फुड़बे ने करैए।

घनश्याम- आब अपन विचार दियौ डाक्टर साहैब?

रघुनाथ- कृष्णदेव बाबूसँ कनीओं नीक नै छी।

घनश्याम- से किए? हुनके जकाँ बेतनेटा पर तँ नै छी?

रघुनाथ- बेस कहलौं। दुरसक ढोल सोहनगर लगै छै। मुदा लगमे...।

मनमोहन- जँ लग तबला हाथ बजौल जाए, तखनि...?

रघुनाथ- बेस कहै छी। तबले जकाँ ढोलोक मुँह छोट आ पॉलिस कएल होइए। रिटायर भेने पेन्शन (अदहा दरमाहा) पर आबि गेलौं। जेते जाँच-जुच करैक यंत्र किनने छी ओ पछिला खाढ़िक भऽ गेल। नवका ठाढ़ भऽ गेल। अपन जे इलाजक प्रक्रिया छल ओ पछड़ि गेल।

मनमोहन- आगूक की सोचै छिऐ?

रघुनाथ- रोग-रोगी आ इलाज छोड़ि सोचलौं कहिया जे आन बात सोचब।

मनमोहन- जीब केना?

रघुनाथ- जे भोग-पारसमे हएत से थोड़े कियो बाँटि लेत। जाबे सुखक दिन छल सुख केलौं, दुखक दिन औत दुख करब। यएह ने भगवानक लीला छियनि।

घनश्याम- अपने सभ जे एना सोचबै तखनि समाज केना आगू बढ़त? समुद्रक ज्वार जकाँ तँ समाजक गति नै छै।

रघुनाथ- (कनी गुम्म भऽ, मुड़ी डोलबैत...) प्रश्न तँ विचारणीय अछि। मुदा आगूक स्पष्ट रस्ता कहाँ देखि पबै छी। कनी समए दिअ, पछाति कहब।

मनमोहन- भाय साहैब, अहाँसँ कनीओं नीक नै छी।

घनश्याम- (मुस्कीआइत...) से की। से की?

मनमोहन- ओना पाँच बर्ख नोकरी बँचल अछि। मुदा जे रूखि देखि रहल छी ओइसँ बूझि पड़ैए जे आगूमे बनरफाँस लटकल अछि।

घनश्याम- से केना?

मनमोहन- अपने इंजीनियर बनि गामसँ शहर एलौं आ बेटा एग्रीकल्चर पढ़ि गामेक ब्लौकमे जुआइन करत।

घनश्याम- ई तँ बढ़ियाँ बात।

मनमोहन- अपने केतए रहब। सभ दिन शहरमे रहलौं आब गाममे नीक लगत?

घनश्याम- शहरेमे रहब।

मनमोहन- कहलौं तँ बड़ बढ़ियाँ । अपन बेटा-पुतोहु गाममे रहत। रिटायर भेलापर सरकारीए अमिला-फमिला रंगगर कपड़ा पहिरा विदा कऽ देत। तखनि...?

घनश्याम- तखनि की?

मनमोहन- बुढ़ाड़ीमे एक गिलास पानिओ के देत।

घनश्याम- गामे चलि आएब।

मनमोहन- (मजबूरी हँसी...) सभ दिन पढ़ल-लिखल लोकक बीच प्रतिष्ठा बना रहि रहल छी। मुदा गामक कोन लूरि अछि जे बुधिक उपयोग करब।

घनश्याम- नै बुझलौं?

मनमोहन- जेकरा जइ काजक लूरि रहल ओ ओहीमे ने बुधियार अछि। मुदा हम?

रघुनाथ- तीनू गोटेक बात तँ सभ सुनबे केलौं। अहीं (घनश्याम) आब विचार दियौ।

घनश्याम- भाय साहैब, अपने बिगड़ि गेलिऐ।

रघुनाथ- बिगड़ब किए। मुदा...।

घनश्याम- मुदा की?

रघुनाथ- बिनु बूझल पैघ रोग रहितो जँ रोगीकँ रोगक

जनतब नै दऽ रोगमुक्त होइले दबाइ खाइले कहबै तँ हँसी-खुशी खाइए।

घनश्याम- हँ से तँ खाइए। मुदा ईहो तँ होइ छै जे समुचित ढंगसँ रोगक जनतब दऽ इलाजोक प्रक्रियाक जनतब देल जाए तँ औरो खुशीसँ दबाइ खाइए।

मनमोहन- हँ, ईहो तँ होइए।

घनश्याम- मनमोहन भाय, जहिना रोगक इलाज डाक्टर, इंजीनक इंजीनियर करै छथि तहिना समाजक कल्याण समाजशास्त्री करै छथि। मुदा...?

मनमोहन- मुदा की?

कृष्णदेव- (बिच्चेमे...) समाजशास्त्री तँ हमहूँ छी। जिनगी भरि समाजशास्त्रे पढ़लौं। मुदा...।

घनश्याम- भाय साहैब, अपने अधिकारी विद्वान छिऐ, तँए...?

कृष्णदेव- तँए की?

घनश्याम- हम बैंकर नै छी, मुदा बैंकक काज केने समाज आ धनक संबन्ध थोड़-थाड़ बुझए लगलौं। तँए कृष्णदेव भायसँ आग्रह करबनि जे जँ आदेश दथि तँ किछु कहबनि।

कृष्णदेव- जखनि सभ एक प्रश्नपर बैसल छी तखनि आदेश कि?। अखनि तँ सभ अपन-अपन सुझिक अनुसार सुझाव रखि रहल छी।

घनश्याम- अपने तँ किताबमे लिखल पढ़ै छी मुदा किताबी बात ताधरि ठमकल रहत जाधरि समाजक गतिक अनुकूल चलैत नै रहत।

कृष्णदेव- (साँस छोड़ि...) हूँ...।

घनश्याम- अखनि जइ काजे बैसलौं तैपर विचार करू। कोनो काज करैक जेहेन इच्छा शक्ति लोकमे रहै छै ओ ओते आगू बढ़ि कऽ सकैए। तँ कोनो एहेन समस्या

नै छै जेकर समाधान नै भऽ सकैए। सभ कियो आदेश दी तँ...?

(तीनू गोटे...)

तीनू गोटे- (कृष्णदेव, रघुनाथ आ मनमोहन...) आदेशे-आदेश। खुलि कऽ बाजू।

घनश्याम- रघुनाथ भाय छथि, शहरमे पछड़ि रहला अछि मुदा गाम तँ ओइ जगहपर ठाढ़ अछि जइ जगहपर रोगक इलाज लेल अखनो झाड़-फूक आ टोना-टापर होइए।

रघुनाथ- (मुस्की दैत...) बेस कहलौं।

घनश्याम- अहिना सभ समस्या अछि। जरूरति अछि एक-एक समस्यामे एक-एक आदमीकेँ सटाएब। जखने समस्यासँ आदमी सटत तखने...।

रघुनाथ- ठीके कहै छी घनश्याम। गामक संबन्धमे...?

घनश्याम- भाय, एक तँ ओहिना बाढ़ि-रौदीक चपेटमे पड़ि गाम अधमरू भऽ गेल अछि, तैपर लोकोक किरदानी एहेन रहैए जे औरो गर्तमे ठेल रहल अछि।

कृष्णदेव- ऐठाम चारिए गोटे छी, तँए सबहक (सौंसे गौआँक) बीचमे बैस जे विचार करब ओ ओते अधिक नीक हएत।

पटाक्षेप

एगारहम दृश्य

(नसीवलालक दरबज्जा। कर्मदेव आ नसीवलाल गप-सप्प करैत...)

नसीवलाल- काजक की समाचार अछि बौआ कर्मदेव?

कर्मदेव- तित-मीठ दुनू अछि।

नसीवलाल- (मुस्कीआइत...) तित-मीठ दुनू अछि। बेसी कोन अछि?

कर्मदेव- स्पष्ट कहाँ बूझि पौलौं। जँ स्पष्ट रहैत तँ दुनूकँ मिला कहितौं।

नसीवलाल- ओ मिलबो मोसकिल अछि।

कर्मदेव- ओ केना मिलत?

नसीवलाल- प्रकृतिक अद्भुत खेल अछि। किछु वस्तु एहेन होइए जे अपन सुआद औरो गाढ़ बनबैए। तँ किछु अपन सुआदे बदलि लैत अछि। तितसँ मीठ आ मीठसँ तित भऽ जाइए। किछु एहनो अछि जे ने तिते अछि आ ने मीठे। दुनूक बीच अछि।

कर्मदेव- एहेन पेंचगर स्थितिमे सोझराएब कठिन अछि।

नसीवलाल- एहेन कोन दुख अछि जेकर दबाइ नइए। भलहिं ओ दबाइ बुझैसँ बाहर किए ने हुअए।

कर्मदेव- तखनि?

नसीवलाल- सभ खेल जिनगीए लेल चलैए। ऐ प्रश्नक उत्तर दू गोटेक बीच नै भेटत। प्रश्नो ओझराएल-ए। एहेन ओझरी लगल अछि जेहेन अमती आ तेतरिक सुआद बेराएब।

कर्मदेव- (विहुँसैत...) आगू की करब?

नसीवलाल- जानकारी (बैसारक) भेलापर की कहलनि?

कर्मदेव- बैसारमे भाग लेबाक आश्वासन तँ सभ देलनि।

(आभा आ शान्तीक प्रवेश...)

नसीवलाल- आभा आ शान्ती तँ आबिए गेली। चारि गोटे सेहो भेलौं। कनी पहिने आकि कनी पाछू ओहो सभ एबे करता।

कर्मदेव- हुनका सभकँ बजौने आबी।

नसीवलाल- नै जरूरी अछि। जिनगी दू रस्ते चलैत अछि। एक काजक सवारीसँ दोसक खाली-खाली।

कर्मदेव- की मतलब?

नसीवलाल- काजक सवारी केतबो उभर-खाभर होइत किए ने चलए मुदा सुरो-सुन्दरीसँ बेसी सोहनगर होइए। जइसँ समैक ठेकाने बिला जाइत अछि।

कर्मदेव- तखनि?

नसीवलाल- एबे करता। काजक अपन महत होइए। जे महत सभ समान दृष्टिए नै बुझै छथि। जेकर फल समए पाबि नीकसँ बेसी अधले भऽ जाइए।

आभा- हमहूँ घरपर सँ सोझहे कहाँ एलौं। जलखै खा कऽ जे निकललौं से निकलले छी।

कर्मदेव- केतौ बाहर गेल छेलौं?

आभा- गामसँ कहाँ बहराएल छेलौं। मुदा गामोमे तँ रंग-बिरंगक सरोवर, झील, जंगल, पहाड़ अछि। जेकरा पार करैमे किछु अधिक समए, सरपट रस्तासँ, बेसी लगिते अछि।

कर्मदेव- की मतलब?

आभा- मतलब यएह जे एक तँ ओहिना कुम्मकर्णी नीनमे अदहासँ बेसी सूतल अछि। तैपर सँ दुखक दर्द सेहो सुता रहल अछि।

नसीवलाल- ई तँ होइते अछि जे जइ खेतकँ जोत-कोड़ नै होइ छै ओ रौद-बरसात पाबि परती बनि जाइए। मुदा

पृथ्वी पुत्र ओकरो उपजाउ बनाइए लइए।

कर्मदेव- (मुड़ी डोलबैत...) हूँ-अ-अ।

नसीवलाल- जे जिबटगर अछि ओकरा परतिये तोड़ब बेसी नीक लगै छै।

शान्ती- चाचाजी, कनीखान सोचए लगै छी तँ छगुन्तामे पड़ि जाइ छी जे हम सभ केहेन स्वतंत्र देशक जिम्मेदार नागरिक छी। जिम्मेदारी की छी आ केतए अछि।

नसीवलाल- प्रश्न तँ गंभीर अछि। मुदा बेहद खुशी भऽ रहल अछि जे एहेन प्रश्नपर नजरि जा रहल अछि। धैनवाद।

शान्ती- (उत्साहित होइत...) चाचाजी जहिना गहबरकँ आँचरसँ पोछि नोरसँ नीप भक्तिनी एकटंगा दऽ शक्तिसँ शक्ति पबैत तहिना मन हुअ लगैए।

नसीवलाल- विचार तँ बहुत पैघ अछि। मुदा ओइले धरतीमे जमि कऽ पएर रोपए पड़त।

शान्ती- की मतलब?

नसीवलाल- मतलबसँ पहिने ई कहू जे जेकर प्रतिनिधित्व (अगुआइ) करै छिऐ ओ केतए ठाढ़ अछि?

शान्ती- ठाढ़ तँ कम्मे देखै छी। बेसीकँ तँ जहिना मुइल नढ़ियाकँ कुत्ता लिड़ी-बिड़ी कऽ खाइत अछि तहिना समस्या खा रहल अछि।

नसीवलाल- समस्याक रंग-रूप केहेन अछि?

शान्ती- केते कहब।

नसीवलाल- किछुओ जँ बाजब नै तँ आन केना बूझत?

शान्ती- चाचाजी, (माथक घाम पोछैत...) कियो खोपड़ी ले तरसैए तँ कियो ताजमहल ले, कियो दूधक धारमे नहाइए तँ कियो एक घोंट लेल।

(सुकदेव, सोमन आ मनचनक प्रवेश...)

आभा- जहिना मनचन भायकेँ पछुआ रोटी भौजी खुअबै छथिन तहिना गामोक काजमे।

मनचन- (विहुँसैत) भरि दिन अहूँ बाल-बोधकेँ सिखबैत हेबै जे खाइमे (भोजमे) आगू आ काजमे पाछू रही।

आभा- से कहाँ सिखबै छिऐ। सिखबै छिऐ जे पहिने करू तखनि खाउ। ककहारामे जहिना डारि-पात छुटैत जाइए तहिना।

मनचन- (अधहँसी हँसैत...) भूखे भजन ने होइ गोपाला।

आभा- कठिया लाड़निक कोन काज होइ छै, से तँ...?

मनचन- हँ, से तँ जिनगीमे केते पँचकठिया देखलौं आ आगूओ देखब।

सुकदेव- (दमसैत...) रे बुड़िबान, सभ दिन एक्के रंग रहमे। उमेरक ठेकान नै छौ।

मनचन- भैया, दुनू हाथ उठा भगवानोकेँ यएह कहै छियनि जे जहिना जिनगी भरि गाए दूधे दैत रहि जाइए, आमक गाछ आमे तहिना हँसते-खेलते दिवस काटि ली। की लऽ एलौं आ की लऽ जाएब।

नसीवलाल- अखनि जइ काजे सभ एकठाम छी से काज करै जाइ जाउ?

सुकदेव- की बाउ कर्मदेव, जिनका सभ ऐठाम गेल छेलौं ओ सभ औता की नै?

कर्मदेव- कहलनि तँ सभ। मुदा...?

सुकदेव- मुदा की?

कर्मदेव- पढ़ल-लिखल लोकक कोन ठेकान। एक-एकटा बातक सतरह-सतरहटा अर्थ अगर-मगर करैत बुझै छथि। तँए...?

सुकदेव- तँए की?

कर्मदेव- यएह जे हमरा गप्पक की माने लगौलनि। से थोड़े

बुझै छी।

सुकदेव- गामक-समाजक- प्रति किनकर केहेन आकर्षण छन्हि?

कर्मदेव- ओना सबहक उपरा-उपरी छन्हि। मुदा घनश्याम कक्काक किछु विशेष छन्हि।

सुकदेव- औरो गोटेक?

कर्मदेव- सभ अपने बेथे बेथाएल छथि। मुदा घनश्याम कक्काक जेहने बेवहार छन्हि तेहने आगू देखैक विचार। असकरो जँ ओ आबि जाथि तैयौ बहुत-किछु भऽ सकैए।

नसीवलाल- जँ चौथाइओ बल बाहरसँ भेट जाए तैयौ उठि कऽ ठाढ़ होइमे असान हएत।

मनचन- नसीवलाल भैया, जहिना पानिमे डूमैत चुट्टीकेँ सरलो खढ़ भेटने जान बँचै छै तहिना जँ कनीओं आस भेटत तैयौ कदमक गाछमे मचकी लगा झूलि लेब। चारिओ आनासँ कम भोँट पेने एमेले-एमपी बनि मुर्गी दकड़ैए आ हम सभ भातो-रोटी नै खा सकै छी।

आभा- अहाँ भोँट दइ छिऐ की नै?

मनचन- किए ने देबै।

आभा- केकरा दइ छिऐ।

मनचन- जेकरा जीतैत देखै छिऐ तेकरा।

आभा- से पहिने केना बुझै छऐ?

मनचन- हद करै छी। जखनि जीतक घोषणा होइ छै तखनि जा कऽ माला पहिरा दइ छिऐ।

आभा- ओ मानि लइए?

मनचन- किए नै मानत। जे अपने सात घाटक पानि पीब गीरथानि जकाँ बजैए आ पतिवरता कहबैए, ओ किए ने मानत।

आभा- तब तँ अहाँ ठकोसँ नम्हर ठक छी।

मनचन- से केना?

आभा- ठक तँ ओ भेल जे निरीह, मुँहदुब्बर, सोझमतियाकेँ ठकैत अछि आ अहाँ तँ ठकक ठक भेलौं।

मनचन- अहिना ने उनटल गंगामे लोक नहा गंगा-स्नानक फल गंगासँ मंगै छन्हि।

आभा- गंगा दइ छथिन?

मनचन- किए ने देथिन। भलहिं सुनटाक फल देथिन वा नै, उनटाक फल किए ने देथिन।

आभा- केना दइ छथिन?

मनचन- साँपक केचुआ देखलिऐ हेन?

आभा- किए ने देखबै?

मनचन- की ओइ केचुआमे साँपे जकाँ मुहसँ नांगड़ि तक नै रहै छै?

आभा- हँ, से तँ रहै छै।

मनचन- तखनि।

आभा- मुदा?

मनचन- मुदा तुदा किछु नै। अहाँकेँ बुझैमे फेर अछि। देखै छिऐ किने जे गामक सभ कहत जे एकोटा ऑफिसमे बिना घूस नेने काज नै चलैए।

आभा- हँ से तँ अछिए।

मनचन- मुदा पाइ लऽ लऽ भोँट दइ छिऐ सेहो कहियो।

आभा- यएह बुझैक बात अछि, जखनि भोँटरसँ भोँट लेनिहार धरि घुसेक वेपार करए लगत तखनि जुग बदलतै।

पटाक्षेप

बारहम दृश्य

(गामक विद्यालयक आँगन। बच्चा सभ फील्डपर खेलैत। रस्ता धऽ कऽ राही सभ चलैत। गोल-मोल बैसार। एकठाम कृष्णदेव, मनमोहन आ रघुनाथ बैसल। बगलमे घनश्याम, नसीवलाल, सुकदेव आ गामक लोक बैसल...)

नसीवलाल- (ठाढ़ भऽ...) आजुक बैसार लेल सभकेँ धैनवाद दइ छियनि जे अपन व्यस्त समैमे आबि गामक बैसारकेँ शोभा बढ़ौलनि। तैसंग होनहार कर्मदेवकेँ औरो बेसी बधाइ दइ छियनि जे जी-तोड़ि मेहनति कऽ बैसार करौलनि।

मनचन- भैया, अहाँ कर्मदेवक प्रशंसा बेसी केलियनि।

नसीवलाल- कम्मे केलियनि। नवयुवक आ बाल-बच्चाक (बेटा-बेटीक) बेसी प्रशंसा केतौ-केतौ अधलो होइ छै।

कृष्णदेव- (चौंकैत...) से केना?

नसीवलाल- मनुखकेँ घरसँ बाहर धरि प्रशंसा-निन्दासँ परहेज करक चाही।

कृष्णदेव- तखनि?

नसीवलाल- उचित सीमाक उल्लंघन होइते बनै-विगड़ैक संभावना बढ़ि जाइत अछि।

घनश्याम- (मुड़ी डोलबैत...) संभव अछि।

नसीवलाल- संभव रहितो कठिन (भारी) अछि। मुदा जाधरि संभव नै हएत ताधरि समाजक गाड़ीओ लीख दऽ ससरब कठिन अछि।

घनश्याम- नीक-अधलाक विचार तँ करैके चाही।

नसीवलाल- निश्चित करबाक चाही। मुदा हटि कऽ नै सटि कऽ।

घनश्याम- की मतलब?

नसीवलाल- मतलब यएह जे जहिना समुद्रक किनछरिक पानि कम गहींरमे रहितो अगम पानिसँ मिलल रहैत, तहिना।

(कनडेरिए आँखिए रघुनाथ, मनमोहन नसीवलाल दिस देखैत तँ मनचन, सुकदेव कृष्णदेव दिस। अपन-अपन मनोनुकूल मुँहक रूप सेहो बनबैत...)

घनश्याम- (ठहाका मारि...) अखनि धरि गामक बैसार कोन रूपे चलैत अछि नसीवलाल भाय?

नसीवलाल- घनश्याम बाबू, जहिना बन्दूकक अनेको गोली खेनिहारकेँ देहक कोनो अंग चिन्हार नै रहैत तहिना गामो-समाजकेँ भऽ गेल।

घनश्याम- कनी फरिछा कऽ कहियौ?

नसीवलाल- ओना अखनि जइ काजे सभ एकठाम बैसलौं पहिने से काज हेबाक चाही। मुदा ऐ तरहक बैसार पहिल-पहिल अछि तँए किछु आनो बात चलबे करत।

मनचन- भैया, हनुमानजी जकाँ कियो छाती फाड़ि देखबैए आकि पेटक बात आ हाथक काजेसँ देखबैए।

(मनचनक बात सुनि कृष्णदेव हंसक हिलुसैत आँखि जकाँ देखि...)

कृष्णदेव- अखनि धरि मनचनकेँ बटेदार बुझै छेलौं मुदा से नै ओ समाजक पटेदार (हिस्सेदार) छी।

(कृष्णदेवक विचार सुनि...)

नसीवलाल- जहिना हाथमे पाँचो-आंगुर पाँच लम्बाइ-चौड़ाइक होइ छै मुदा हाथक शोभा तँ बरबैरे बढ़बै छै किने?

कृष्णदेव- हँ से तँ बढ़ैबते छै।

नसीवलाल- तहिना ने सड़क बनौनिहारमे पत्थर बैसौनिहारसँ लऽ

कऽ नक्शा बनौनिहार धरिक होइ छै।

कृष्णदेव- मुदा?

नसीवलाल- हँ। जहिना सिर क्षीणका भगवतीक महत होइत तहिना ने मुस्कीआइत खर्गधारी भगवतीओक होइत। (बिच्चेमे...)

घनश्याम- हँ हेबाक चाही। मुदा पहिने दुनूक परिचए हएब जरूरी।

नसीवलाल- निश्चित। जहिना भूतपर भविष्य ठाढ़ होइत तहिना ने मनुष्योक पछिला जिनगी अगिला जिनगीकेँ ठाढ़ करैमे मदतिगार होइत।

मनचन- जँ से नै हुअए, तखनि?

नसीवलाल- ओहिना हएत जहिना सत्यवादी हरिश्चन्द्रक पार्ट (स्टेजपर) कियो शराबी झुमि-झुमि कठही चौकीपर अलापति।
(ठहाका...)

घनश्याम- हँसी-मजाक छोड़ि बैसारक गरिमा बनाउ?

नसीवलाल- (अधहँसी हँसि...) बहुत नीक विचार घनश्यामबाबू, देलनि। आइ धरि हृदए तड़पति रहल जे गामोक नक्शा इतिहासक पन्नामे जोड़ाए। से...?

मनचन- भैया, जइ समाजमे प्रोफेसर, इंजीनियर, डाक्टर, बैंक मैनेजर लऽ कऽ गोबर बीछिनिहारि धरि छथि तइ समाजक इतिहारस नै बनै ओ लाजिमी छी।

नसीवलाल- कहलह तँ ठीके मुदा...।

मनचन- मुदा की?

नसीवलाल- यएह जे, ओना आइ धरिक समाजक पन्ना-पन्ना पढ़ए पड़त। ओकरा तकैमे किछु मेहनति उठबए पड़त। मुदा जँ ओकरा विचारणीय प्रश्न बना रखि आजुक समाजक अध्ययन कऽ निर्माणक संकल्प लेल जाए,

तहूसँ काज चलि सकैए।

मनचन- से केना हएत?

घनश्याम- जँ करैक इच्छाशक्ति जगा संकल्पबद्ध भऽ डेग उठाबी तँ भऽ सकैए।

कर्मदेव- घनश्याम काका, अहाँ तँ नारदजी जकाँ छोटका बैंकक मीटिंगसँ लऽ कऽ बड़का बैंकक मीटिंग धरिक अनुभव रखने छी तँए नीक हएत जे अपने समाजक एकटा रूप-रेखा बना बजियौ?

घनश्याम- बाउ कर्मदेव, कहलह तँ ठीके बाहरी दुनियाँसँ भिन्न ग्रामीण दुनियाँ अछि। तँए जे तरी-घटी गामक नसीवलाल भाय जनैत-बुझैत- छथि से नै बुझै छी।

सुकदेव- ई कोनो बड़ पैघ समस्या नै छी। नीक हएत जे दुनू गोरे विचारि कऽ आगूक डेग उठाबी।

(सुकदेवक विचारकेँ मनमोहन आ रघुनाथ समर्थन केलनि। मुदा कृष्णदेव मुँहक बात रोकि लेलनि...)

मनचन- (मुस्की दैत...) घनश्याम भायक तेहेन पटपेटा पेट छन्हि जे नसीवलाल भैयाकेँ पीचिए देथिन।

घनश्याम- (हँसैत...) नै मनचन, मोटेलहा पेट रहैत तखनि ने फुललाहा छी। कोढ़िलोसँ हल्लुक।

मनचन- गणेशजी बला। जे एक-रत्तीक मुसरी मुनहर सन पेटकेँ उठा दौगैत रहैए।

घनश्याम- हँ। हँ। सएह बुझहक।

कृष्णदेव- (रूष्ट भऽ...) समैक उपयोग करू।

घनश्याम- भाय, विचार अछि जे सभ कियो दिलसँ अपन-अपन जिनगीक अनुभव व्यक्त करी। जइसँ एक नव समाज बनैक सुदृढ़ नीब पड़त।

कृष्णदेव- बहुत बढ़ियाँ, बहुत बढ़ियाँ। जाधरि गामक दशाक

सम्यक चर्च नै हएत ताधरि दिशा निर्धारित करैमे किछु कमी रहबे करत।

नसीवलाल- बहुत बढ़ियाँ विचार कृष्णदेवबाबूक छन्हि। जाधरि पेटक नीक-सँ-अधला धरिक विचार समाजक बीच नै राखब ताधरि समाजक अंतरी मिलान केना हएत?

मनचन- भैया, अंतरी मिलान केकरा कहै छै?

घनश्याम- (मुस्की दैत...) छाती मिलानकेँ।

मनचन- छाती मिलान...। छाती मिलान तँ दुइए ठाम...। समधिक संग आ दुनू परानी...। दू परानी...?

घनश्याम- कोन मंत्र पढ़ए लगलह मनचन?

मनचन- व्यासजी आ गनेसजीमे यएह ने शर्त्त रहनि जे बिनु बुझने कलम नै बढ़ावी।

घनश्याम- अहाँ तँ शास्त्रो बुझै छी मनचन।

मनचन- पढ़ि कऽ नै, भागवत सुनि कऽ। तेसरा तक अपनो गामक बरहम स्थानमे साले-साल भागवत होइ छेलै किने।

नसीवलाल- अखनि धरि बैसारक मूल विषयपर नै एलौं हेन। अढ़ाइ-तीन घंटा बित गेल। ओना, भलहिं हम सभ विषयानतरे गप-सप्प किए ने केलौं मुदा बेबुनियाद बात तँ नै भेल।

घनश्याम- आन काजसँ भिन्न बौद्धिक काज होइए। हाथ-पएरक काज जकाँ लगातार केने काज छुटैक संभावना बढ़ि जाइत अछि। तँए...?

मनचन- घनश्याम भाइक विचारकेँ समर्थन करै छी।

नसीवलाल- बीचमे टिफीनक आवश्यकता तँ जरूर होइत अछि।

सुकदेव- पशुपति नाथक दर्शन आ किछु बनिज हएब, जहिना दोबर लाभ दैत अछि तहिना बाल-भोग भेलासँ

हएत।

मनचन- बेस कहलिऐ भैया। अखनि धरि जे हम सभ समाजमे टौहकी संग पहटोमे फँसल छी, तेकरो...?

घनश्याम- मनचनक दृष्टिकूट नै बुझलौं?

नसीवलाल- दोसराक व्याख्यासँ नीक मनचनेक व्याख्या हएत।

मनचन- से किए भैया?

नसीवलाल- हौ मनचन, जमीन-जाल, शब्द-जाल आ वाक्-जालमे सभ ओझराएल छी। तोहर आत्मा की बाजि रहल छह से तोंहीटा बुझै छहक। वाणी होइत जे निकलतह वएह बात तोहर भेलह।

मनचन- भैया, आत्मो बोली तँ दुबटिया (बुधिक मोड़) पर हरा जाइत अछि। एक्के विचारकेँ आमक गाछ जकाँ डारि छिटकि जाइ छै।

सुकदेव- मनचन, गप्पक छिलनि छोड़ह?

मनचन- भैया, जाबे गप्पक छिलनि नै करब ताबे शीशो जकाँ सुरेब केना हएत। खाएर, जहिना अझुका बैसार ऐतिहासिक भऽ रहल अछि तहिना जे पनपिआइ करब तइमे सभ मिलि बना, परोसि सभ मिलि खाए।

घनश्याम- मनचन, जे कहलक ओ आब नै छै। सभठाम चलै छै।

मनचन- आँखिक सोझहामे जातिक आ दू सम्प्रदायक बीच खानो-पान आ प्रेमसँ बिआहो होइत देखै छी। मुदा सर्वसम्मतिसँ किए ने घोषणा कऽ दइ छै। जखनि कि धरतीसँ अकास धरि उड़ियाइत अछि।

पटाक्षेप।

तेरहम दृश्य

(दोसर बैसार...)

घनश्याम- मनचन, बरी बड़ सुन्दर बनल छेलह। नून देनिहारकेँ चाबसी दइ छियनि।

मनचन- हमरा रिझबै छी। दू सालसँ सभ नोनगर भोज विन्यासमे हमहीं नोन दइ छी।

घनश्याम- किए?

मनचन- गाममे बारह आना लोक रोगिए-टट्टी अछि। कियो नून बाड़ने अछि तँ कियो अधे खाइए। भोज तँ सामुहिक छी। एकठाम बैस खाएब।

घनश्याम- दोसरो चाबसी दइ छी मनचन।

मनचन- से किए?

घनश्याम- अखनि धरि हमहूँ नै गौर केने छेलौं जे अहाँ केने छी।

मनचन- भाय, अहाँक सोझहामे बजैत संकोच होइए। मुदा अपना घरमे लोक नीकसँ नीक आ अधलासँ अधला बजैत अछि तँए...?

घनश्याम- चुप किए भेलौं? आइ धरि जे आनन्द जिनगीमे नै भेटल छल ओ भेट रहल अछि।

मनचन- केना?

घनश्याम- अपनासँ अगिला लग जी हुजुरी करए पड़ैए आ पछिलाकेँ जी-हजुरी करबै छिऐ। जिनगीक कोनो आड़िए-धूर नै अछि।

सुकदेव- मनचन, मुँह बन्न करह। बैसारक महत होइत अछि। दोसरो गोटेकेँ अवसर दहुन?

आभा- एक तँ उमेरे केते भेल हेन। मुदा जेतबे अछि तइमे आइ जेते समाजक बीच आएल ओते...।

नसीवलाल- कोनो गलत आकि सही परम्परा ओतबे दिन चलैत अछि जेते दिन लोक चलबैत अछि। ऐ दिस विवेकीकेँ जरूर नजरि देबाक चाहियनि।

आभा- की नजरि?

नसीवलाल- यएह जे पाछूसँ अबैत बेवहार आजुक समैमे अनुकूल अछि वा नै। विवेकी मनुख होइक नाते सबहक दायित्व बनै छन्हि जे सनातनी बेवहार अछि ओ जीवित रहए।

आभा- सनातनी बेवहार की?

नसीवलाल- परिवर्तनशील बेवहार।

शान्ती- काका, गलत बेवहार समाजमे पैसल केना?

नसीवलाल- ने एक बेर पैसल आ ने एकदिन पैसल। घुसकुनिया-ओंघरनिया दैत पैस अंकुरित भऽ विशाल वृक्षक रूपमे बदलि गेल। जइसँ लोक, परलोकक संग विश्वक नक्शे बदलि गेल।

शान्ती- डाक्टरकाका, अपने किछु...?

रघुनाथ- देखियौ, जहिना रामायणमे तुलसी कहने छथि- हरि अनन्त हरि कथा अनंता' तहिना अछि। ओना, दुनियाँक सभ मनुखकेँ किछु आवश्यकता आ गुन एक तरहक अछि, मुदा...?

शान्ती- मुदा की?

रघुनाथ- यएह जे किछु एहनो अछि जे सभकेँ फुटो-फुट-अलगो-अलग- होइत। ओना हमहूँ एक भगुए भऽ गेल छी। समाज अध्ययन तँ विशाल अध्ययन छी, तँए...। कृष्णदेवबाबू आ मनमोहनबाबू बुझा सकै छथि।

मनमोहन- भाय, जहिना अहाँ रोग आ रोगीक बीच रहलौं तहिना छी। मुदा मनक बात छिपाइओ कऽ रखब

उचित नै बुझै छी।

सुकदेव- हृदैक बात इंजीनियर साहैब बजला।

मनमोहन- जेना-जेना समए बित रहल अछि तेना-तना लोकोक जिनगी बदलि रहल अछि। पहिलुका लोक सोलहो आना शरीरसँ श्रम कऽ शरीरक रक्षा करै छला।

सोमन- जेना आइ देखै छिऐ तेना नै छेलै?

मनमोहन- नै।

सोमन- (किछु शंका करैत...) इंजीनियर साहैब, केते दिन भेल से तँ नीक जकाँ मन नै अछि। मुदा अहिना एक बेर रौदी भेल से मन अछि। जहाँ-तहाँ लोक कमाइ-खटाइले भागल। हमहूँ भोलबाकक्का सेने कलकत्ता गेलौं।

आभा- कलकत्ता गेल छी?

सोमन- गेले नै छी दू साल ठेलो चलौने छी। जइसँ सभ गली-कुच्ची देखल अछि।

आभा- केना ठेला चलबै छेलिऐ?

सोमन- छातीमे ठेलाक अगिला भाग अड़ा दुनू हाथसँ दुनू भागक डंटा पकड़ि ठेलै छेलौं।

आभा- इंजीन गाड़ी सभ नै छेलै?

सोमन- छेलै। जीपे-कारक कोन बात जे बड़का-बड़का कोठा, करखन्ना, दोकान सभ छेलै। जेहेन ओइठीनक दोग-सान्हिक सड़क अछि तेहेन तँ अपना सभ दिस अछिओ नै।

घनश्याम- बात दोसर दिस बढ़ल जाइए।

मनमोहन- बड़ बढ़ियाँ घनश्याम भाय कहलनि। एक तँ दैवी प्रकोप-बाढ़ि, रौदी-सँ अपन इलाका पछुआएल दोसर मनुक्खोक दोख कम नै छै। जे इलाका जेते पहिने जागल ओ ओते अगुआएल।

आभा- कनी सोझरा दियौ कक्का?

मनमोहन- (मुस्की दैत...) पहिने जंगली अवस्थामे अपना सबहक पूर्वज रहै छला। हाथे-पएरसँ सभ किछु करै छला। जेना-जेना बुइध-अकील बढ़ैत गेल तेना-तेना आगू मुहेँ ससरैत गेला। हथकरघासँ पाँच सीढ़ी आगू बढ़ि कम्प्यूटर युगमे पहुँच गेल छी।

आभा- ऐसँ आगूओ बढ़त?

मनमोहन- निश्चित बढ़त। निचेनमे कहियो औरो कहब। अखनि जइ काजे एकत्रित भेल छी तेकरा आगू बढ़ाउ।

सोमन- भाय, हम सभ ने कहियो काल मासुल दऽ कऽ बस, जीपपर चढ़ै छी। अहाँकेँ तँ अपने अछि।

मनमोहन- से तँ अछिए।

घनश्याम- ओना बाढ़ि रौदी दुनू जनमारा छी। मुदा आइ रौदीक विचार करू।

शान्ती- मैनेजर काका, अहाँ सभ तरहे ऊपर छी। ओना समाजक किछु भार ऊपरमे अछि। तँए चाहब जे झगड़ा-झंझटिसँ नै विचारक रस्तासँ समाज आगू बढ़ए।

घनश्याम- विचार तँ अपनो सएह अछि। मुदा नहियोँ चाहलापर केते-गोटेकेँ बैंकक लोनमे जहल पठबए पड़ैए आ चौकठि-केबाड़ उखाड़ए पड़ैए।

शान्ती- से किए?

घनश्याम- (विस्मित होइत...) की कहब बोरिंग-दमकल, गाए पोसैक लोन उठा सराध-बिआहक भोज कऽ पूजी नष्ट कऽ लैत अछि। समैपर आपस नै करैत।

शान्ती- तखनि?

घनश्याम- औझुका बैसार तँए ऐतिहासिक अछि जे समाज

अपन कल्याणक दिशा निश्चित करथि।

नसीवलाल- जुग-जुगान्तरसँ जे मनोवृत्ति बनि गेल अछि ओकरा एकाएक नै बदलल जा सकैए। मुदा बिना बदलने काजो नै चलत। तँए जरूरी अछि जे उत्पादन आ उपभोगकेँ नीक जकाँ सभ बुझी।

घनश्याम- जुगक अनुकूल विचार अछि।

सुकदेव- घनश्यामबाबू, गामक बारह आना जमीन हुनका सबहक छियनि जे गाम छोड़ि अनतए जा नोकरी करै छथि। जखनि कि खेती केनिहारकेँ अपन खेत नै छियनि।

घनश्याम- (मुड़ी डोलबैत...) हँ से तँ अछिए।

सुकदेव- तैबीच केना सामंजस्य हएत?

घनश्याम- ओना अपना सभ बुझै छी जे अंग्रेजकेँ भगा हम सभ स्वतंत्र भेलौं मुदा से नै छी। जखनि शासन आ सम्पति (देशक) सबहक सझिया भए जिनगीक समुचित विकास दिस बढ़त तखनि हएत।

रघुनाथ- (हृदए खोलि...) मन हल्लुक करै दुआरे अपन बात कहै छी। जहिना जुआनीक उमकीमे गाम छोड़ि शहर गेलौं तहिना आइ बूझि पड़ैए जे...?

मनमोहन- रुकलौं किए?

रघुनाथ- संकोच होइए। जैठीम छी तैठीम निहत्था भऽ गेलौं। जिनगीक सभ किछु छीना रहल अछि। मुदा गाममे सभ किछु देखि रहल छी।

मनमोहन- संकोच किए होइए।

रघुनाथ- पूजी नष्ट होइत देखि रहल छी। जइले जिनगी गमेलौं सएह...?

मनमोहन- डाक्टर साहैबसँ कनीओं नीक नै छी। ओना डाक्टर साहैबकेँ सभ किछु भेट जेतनि मुदा...?

रघुनाथ- (मुस्की दैत...) मुदा की?

मनमोहन- एग्रीकल्चर शिक्षा पाबि बेटा गाममे रहत आ अपने शहरमे। बुढ़ाड़ीमे एकलोटा पानिओ के देत।

सोमन- अहाँक गाम छी। खेत-पथार छी। अहाँक सुआगत अछि जे गाम आबि अपन जिनगीक अनुभव अनाड़ी-धुनाड़ीकेँ दिऐ।

कृष्णदेव- अखनि हम तनावमे चलि रहल छी। मुदा तैयो कहै छी अहाँ सबहक विचारानुसार जीवैक कोशिश करब।

शान्ती- घनश्यामकाका, आगूक भार अहाँ ऊपर?

घनश्याम- गामक भाग जगि गेल। पूजीक जेते जरूरति हएत ओ बैंकसँ दिआ देब। भने एग्रीकल्चर ग्रेजुएट गाममे रहता, हुनका माध्यमसँ गामक योजना बना उन्नति खेती आ खेतीसँ जुड़ल कल-कारखाना लेल परियासरत् रहब।

शान्ती- (हँसैत...) जिनगीक सार्थकता पाबि रहल छी।

घनश्याम- किछु करैक संकल्प सभ लिअ। जखने सामुहिक डेग उठत तखने रस्ता धड़ैमे देरी नै लगत।

नसीवलाल- सबहक दुख-सुख- सहबहक छी।
सबहक इज्जत-सबहक छी।

पटाक्षेप

समाप्त।